एकलव्य का प्रकाशन

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव

रूसी से अनुवाद : विजया उमराणीकर

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव
रूसी से अनुवाद : विजया उमराणीकर
चित्र : सौरभ दास

एकलव्य का प्रकाशन

प्यारा कुनबा

PYARA KUNBA

लेखक: निकोलाई नोसोव
रूसी से अनुवाद: विजया उमराणीकर
चित्रांकन: सौरभ दास
पृष्ठ 5 व 8 के चित्र: विवेक वर्मा

सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
संस्करण: जनवरी 2006/3000 प्रतियाँ
प्रथम पुनर्मुद्रण मई 2010/3000 प्रतियाँ
70 gsm मेपलिथो व 170 gsm आर्ट कार्ड कवर
ISBN: 978-81-87171-67-6
मूल्य: 40.00 रुपए

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्स: (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल, फोन: (0755) 255 5442

घटना क्रम

बड़ा फैसला	5
अनचाही रोक	8
हमने रास्ता निकाल लिया	10
अगले दिन	13
शुरूआत	15
ताप गिरा	19
ताप बढ़ा	21
माया ने हाथ बँटाया	25
आफत!	29
पायोनियर सभा	31
मददगारों ने मदद की	36
आखिरी तैयारियाँ	40
सबसे कठिन दिन	42
अपराधी कौन?	46
आशा टूट जाने के बाद	50
हमारी गलती	54
जन्मदिन	58
देहात की ओर	63

प्यारा कुनबा

बड़ा फैसला

यह घटना उसी दिन की है। मीश्का और मैं टीन के डिब्बे से भाप का इंजन बना रहे थे कि वह बीच ही में फट गया। मीश्का ने डिब्बे में पानी को बहुत ज्यादा गरम कर दिया था, जिससे डिब्बा फट गया और भाप से मीश्का का हाथ जल गया। खैर, उसकी माँ ने फौरन उस पर नैफ्था का मलहम लगा दिया। यह बड़ी रामबाण दवा है। हाँ, मेरे कहने का यकीन न हो तो एक बार खुद लगाकर देख लीजिए। लेकिन ध्यान रखिए, मलहम जलते ही लगा लेना चाहिए। नहीं तो चमड़ी निकल आएगी।

भाप का इंजन फट जाने पर मीश्का की माँ ने हमें फिर उसके साथ नहीं खेलने दिया। इतना ही नहीं, बल्कि उसे कूड़े में फेंक दिया। कुछ दिन तो हम सोच ही नहीं पाए कि अब क्या किया जाए। यह समय बड़ी मुश्किल से कटा।

बसन्त का आरम्भ था। बर्फ हर जगह पिघल रही थी। गलियों में कलकल करते पानी के छोटे-छोटे नाले बह रहे थे। बसन्ती सूर्य की तेज़ रोशनी खिड़कियों से अन्दर आ रही थी। लेकिन मीश्का और मैं बिलकुल उदास थे। हम दोनों की अद्‌भुत जोड़ी है – कुछ काम किए बिना हमें चैन नहीं आता। जब हमारे पास कोई काम नहीं होता, हमारा मन नहीं लगता। हम किसी-न-किसी उधेड़बुन में पड़े रहते हैं और आखिर कुछ काम ढूँढ ही निकालते हैं।

एक दिन मैं मीश्का से मिलने गया और मैंने देखा कि वह मेज़ के पास, हाथों में सिर थामे कोई किताब पढ़ने में लीन है। पढ़ने में वह इतना मशगूल था कि उसको मेरे आने का भी पता न चला। मैंने दरवाज़े को फटाक से बन्द किया, तभी जाकर उसने सिर उठाया।

"ऐं, कौन, निकोलाद्‌ज़े?" उसने मुँह फाड़कर हँसते हुए कहा।

मीश्का मुझे मेरे असली नाम से कभी नहीं पुकारता। सब लोग मुझे कोल्या कहते हैं, लेकिन मीश्का इसकी बजाय मेरे लिए कोई-न-कोई विलक्षण नाम ढूँढ निकालता है, जैसे निकोला, मिकोला, मिकूला सेल्यानीनोविच या मिक्लूखो-माक्लाइ, और एक दिन तो उसने मुझे निकोलाकी तक कहा। हर दिन मुझे एक नया नाम

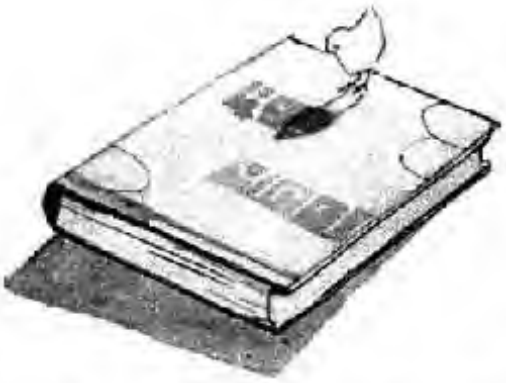

मिलता है। लेकिन अगर उसे यही पसन्द है, तो मैं बुरा क्यों मानूँ।

"हाँ", मैंने कहा। "मैं ही हूँ। कौन-सी पुस्तक पढ़ रहे हो?"

"बड़ी मजेदार किताब है," मीश्का बोला, "आज ही सबेरे अखबार की दुकान से खरीदी है।"

मैंने पुस्तक को देखा। नाम था *मुर्गी-पालन*। इसके हर पृष्ठ पर मुर्गों के पिंजरों की विविध आकृतियाँ तथा खाके थे।

"इसमें मजेदारी की क्या बात है?" मैंने पूछा। "मुझे तो यह कोई वैज्ञानिक पुस्तक जैसी लगती है।"

"हाँ, इसीलिए तो यह मजेदार है। यह कोई बेसिरपैर की परी-कथाओं की किताब नहीं है। इसकी हर बात सच है। यह बड़ी उपयोगी किताब है और यही इसकी विशेषता है।"

मीश्का ऐसा लड़का है जो हर बात की उपयोगिता पर ध्यान देता है। जब कभी उसके पास जेब खर्च की थोड़ी-सी भी रकम होती है, वह इस पुस्तक जैसी कोई उपयोगी वस्तु खरीद लेता है। एक बार उसने *प्रतिलोम त्रिकोणमितीय फलन तथा चेबिशेव के बहुपद* नामक पुस्तक खरीदी। अलबत्ता उसका एक शब्द भी उसके पल्ले नहीं पड़ा। इसलिए उसने यह फैसला किया कि वह उसे तभी पढ़ेगा जब वह खुद उसको समझने लायक हो जाए। तब से यह पुस्तक अलमारी में पड़ी-पड़ी मीश्का के लायक होने का इन्तज़ार कर रही है।

मीश्का ने पढ़े हुए पृष्ठ पर निशान लगाया और पुस्तक बन्द की।

"इस किताब से तुम कई बातें जान सकते हो," उसने कहा। "मुर्गी, बत्तख, हंस तथा टर्की, सभी के पालन-पोषण की पूरी जानकारी है इसमें।"

"तुम कहीं टर्की पालने की बात तो नहीं सोच रहे?"

"नहीं, फिर भी इस बारे में पढ़ना मुझे अच्छा लगता है। मुझे पता चल गया है कि हम इनक्युबेटर नामक यंत्र बना सकते हैं, जिसमें मुर्गी के बिना ही अण्डे सेये जा सकते हैं।"

"ऊँह!" मैंने कहा। "यह भी कोई बात है! सभी को यह मालूम है और मैं तो गए साल उसे देख भी चुका हूँ, जब मैं अपनी माँ के साथ सामूहिक फार्म गया था। वहाँ का इनक्युबेटर रोज़ अण्डों से पाँच-पाँच सौ, बल्कि हज़ार तक चूज़े पैदा कर देता था। इतनी तेज़ी के साथ कि उन्हें निकालने का वक्त भी नहीं मिलता था।"

"सच!" मीश्का ने उत्तेजित होकर पूछा। "मुझे नहीं मालूम था। मैं समझता था कि बस मुर्गियाँ ही अण्डे से सकती हैं। देहात में मैंने कितनी ही मुर्गियों को अण्डे सेते हुए देखा था।"

"अरे, मैंने भी ऐसी कई मुर्गियाँ देखी हैं," मैंने कहा। "हाँ, यह ठीक है कि इनक्युबेटर ज़्यादा अच्छा रहता है। मुर्गी ज़्यादा से ज़्यादा दर्जन भर अण्डे ही एक साथ से सकती है, लेकिन इनक्युबेटर में हज़ारों अण्डे एक साथ सेये जा सकते हैं।"

"मालूम है मुझे भी," मीश्का बोला। "यही तो पुस्तक में भी लिखा है। एक बात और है। मुर्गी जब तक अण्डों को सेती या बच्चों का पालन-पोषण करती रहती है, वह नए अण्डे नहीं देती। लेकिन अगर हमारे पास अण्डे सेने के लिए इनक्युबेटर हो, तो मुर्गी अण्डे देती ही चली जाती है।"

सेने की बजाय अगर मुर्गियाँ लगातार अण्डे ही देती रहीं तो कितने अधिक अण्डे मिल सकेंगे, हमने इसका हिसाब लगाना शुरू किया। अण्डों को सेने के लिए मुर्गी इक्कीस दिन लेती है। और बच्चे निकलने के बाद उनके पालने-पोसने में मुर्गी को कितना समय लगता है, यह देखो तो मालूम होगा कि कोई तीन महीने बाद ही वह फिर अण्डे देना शुरू करती है।

"तीन महीने, यानी नब्बे दिन," मीश्का ने कहा। "अगर अण्डे सेने में ही न लगी रहे तो हर साल वह नब्बे अण्डे अधिक दे सकेगी, भले ही वह एक ही अण्डा रोज क्यों न दे। इस हिसाब से दस मुर्गियों वाले छोटे-से फार्म में भी साल में नौ सौ अण्डे ज़्यादा पैदा होंगे। और अगर हज़ारों मुर्गियों वाले किसी बड़े सामूहिक फार्म या सरकारी फार्म की सोचो, तो नब्बे हज़ार अधिक अण्डे हो जाएँगे। जरा सोचो तो! नब्बे हज़ार अण्डे!"

इनक्युबेटर की उपयोगिता पर हम काफी समय तक चर्चा करते रहे।

इसके बाद मीश्का बोला, "भई सुनो, हम अपना एक छोटा-सा इनक्युबेटर क्यों न बनाएँ और कुछ अण्डे सेयें!"

"कैसे बना लें?" मैंने पूछा। "यह कोई इतनी आसान बात थोड़े ही है।"

"मुझे वह इतनी कठिन भी नहीं लगती," मीश्का बोला। "इस पुस्तक में सभी कुछ लिखा हुआ है। मुख्य बात यह है कि अण्डों को लगातार इक्कीस दिन गरम रखना चाहिए। उसके बाद चूजे अपने आप बाहर निकल आएँगे।"

अपने खुद के चूजे होने का विचार मुझे बड़ा अच्छा लगा। तरह-तरह के पक्षियों तथा प्राणियों का मैं बड़ा शौकीन हूँ। पिछले शरद में हम दोनों अपने स्कूल के प्रकृति-प्रेमी मण्डल में शामिल हुए थे। अपने प्रिय पालतू जानवरों के लिए हमने कुछ काम भी किया, लेकिन उसी समय मीश्का को भाप-इंजन बनाने की सूझी और हमने मण्डल में जाना बन्द कर दिया। मण्डल प्रमुख वीत्या स्मिर्नोवा ने हमें धमकाया कि अगर हमने कुछ काम नहीं किया तो वह हमारे नाम सदस्यों की सूची में से निकाल देगा। लेकिन हमने एक और अवसर देने के लिए उससे प्रार्थना की।

मीश्का कल्पना करने लगा कि जब अपने चूजे निकल आएँगे, तब कितना मजा आएगा।

"कैसे नन्हे-नन्हे और प्यारे-प्यारे चूजे होंगे वे!" वह बोला। "रसोई-घर का एक कोना हम उनके लिए अलग कर देंगे और वे वहीं रह सकते हैं। हम उनको खिलाएँगे और उनकी देखभाल करेंगे।"

"हाँ, लेकिन इससे पहले हमें काफी कुछ करना होगा। यह मत भूलो कि अण्डों में से बाहर आने में उनको तीन सप्ताह लगेंगे।" मैंने कहा।

"तो क्या हुआ? हमें तो बस इनक्युबेटर तैयार करना है, चूजे अपने आप निकल आएँगे।"

कुछ समय तक मैं इस बारे में सोचता रहा। मीश्का मेरी ओर उत्सुकता से देख रहा था। मैं समझ गया

कि वह काम को जल्दी-से-जल्दी शुरू करने के लिए उतावला है।

"ठीक है," मैंने कहा। "वैसे भी अभी हमारे पास कुछ और काम नहीं है। चलो, यही सही।"

"मैं जानता था कि तुम तैयार हो जाओगे!" मीश्का प्रसन्नता से चिल्लाया। "मैं इसे अकेले ही कर लेता, लेकिन तुम्हारे बिना उसमें आधा भी मज़ा नहीं आता।"

अनचाही रोक

"शायद हमारे लिए इनक्युबेटर बनाना जरूरी नहीं है। अण्डों को बस एक बर्तन में डालकर अँगीठी पर रख दिया जाए," मैंने प्रस्ताव रखा।

"अरे नहीं, इससे कुछ न होगा," मीश्का बोल उठा। "आग बुझ जाएगी और सारे अण्डे खराब हो जाएँगे। इनक्युबेटर की विशेषता यह है कि उसमें बराबर 39 डिग्री सेंटीग्रेड ताप रहता है।"

"39 डिग्री ही क्यों?"

"इसलिए कि जब मुर्गी अण्डे सेती है, तब उसका ताप यही होता है।"

"तो क्या इसका मतलब यह है कि मुर्गी को भी ताप होता है? मैं समझता था कि केवल आदमियों को ही बुखार आने पर ताप होता है।"

"अरे पागल, आदमी बीमार हो या चंगा, शरीर में ताप हमेशा ही रहता है। हाँ, जब उसे बुखार आता है, तब ताप बढ़ जाता है।"

इसके बाद पुस्तक खोलकर मीश्का ने एक चित्र की ओर संकेत किया।

"देखो, इनक्युबेटर ऐसा होता है। यह पानी की टंकी है, जिसमें से एक छोटी नली निकलकर अण्डे रखने की पेटी तक गई है। नीचे से टंकी को गरम किया जाता है। गरम पानी नली में बहता है और अण्डों को गर्मी पहुँचाता है। देखो, यहाँ तापमापी है, जिससे ताप देखा जा सकता है।"

"लेकिन हम टंकी कहाँ से लाएँगे?"

"हमें टंकी चाहिए ही नहीं। उसकी जगह हम टीन के खाली डिब्बे का उपयोग कर सकते हैं। हमें छोटा इनक्युबेटर ही तो बनाना है।"

"और हम उसे गरम कैसे करेंगे?" मैंने पूछा।

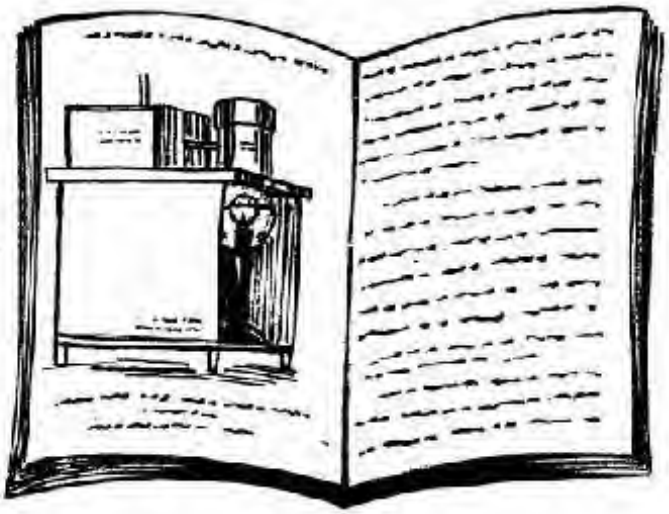

"मिट्टी के तेल के साधारण लैम्प से। हमारे कबाड़खाने में एक पुराना लैम्प कहीं पड़ा हुआ है।"

हम कबाड़खाने में गए। वहाँ एक कोने में बेकार चीज़ों का ढेर लगा हुआ था, जिसकी हम छानबीन करने लगे। वहाँ कितनी ही चीज़ें थीं – पुराने जूते, रबर के जूते, टूटा छाता, ताँबे की एक अच्छी नली। बोतलों और टीन के खाली डिब्बों की तो कोई गिनती ही नहीं थी। हमने करीब-करीब पूरा ढेर ही छान लिया, तब जाकर मेरी निगाह तख्ते पर रखे लैम्प पर गई। मीश्का ने चढ़कर उसे निकाल लिया। लैम्प धूल से भरा हुआ था, लेकिन चिमनी साबुत थी। और सबसे खुशी की बात यह थी कि लैम्प में बत्ती भी मौजूद थी। हमने लैम्प, ताँबे की नली तथा टीन के एक बड़े डिब्बे को उठाया और यह सब सामान रसोई-घर में ले आए।

सबसे पहले मीश्का ने लैम्प साफ किया, उसमें तेल डाला और उसे जलाकर देखा। लैम्प अच्छी तरह जलने लगा। बत्ती को ऊपर-नीचे करके लैम्प की लौ को इच्छानुसार छोटा-बड़ा किया जा सकता था। हमने लैम्प बुझाया और इनक्युबेटर बनाने के काम में लग गए। लगभग पन्द्रह अण्डे रखने लायक प्लाइवुड की एक बड़ी पेटी बनाई। अण्डों को ठीक तथा गरम रखने के लिए पेटी में रूई का अस्तर लगाया और उस पर नमदा चढ़ा दिया। फिर पेटी का ढक्कन तैयार किया और उसमें तापमापी के लिए एक छेद बनाया, ताकि हम ताप देख सकें। अब बस गर्मी देने का साधन लगाना भर रह गया था। हमने डिब्बे के ऊपर तथा नीचे एक-एक छेद कर दिया। ऊपर के छेद में नली को जोड़ दिया। इनक्युबेटर की पेटी के बाजू में एक छेद किया और नली को इस तरह घुमाकर अन्दर घुसा दिया कि उसका दूसरा सिरा फिर से बाहर आ गया। उसे हमने डिब्बे के तल में बनाए छेद से जोड़ दिया। इस मुड़ी-तुड़ी नली से पेटी के अन्दर एक तरह का रेडियेटर बन गया।

अब टीन के डिब्बे को गरमाने के लिए लैम्प रखना था। मीश्का लकड़ी का एक बक्सा ले आया। बक्से को हमने सीधा खड़ा किया, ऊपर की ओर एक गोल छेद किया और उसके ऊपर इनक्युबेटर को इस तरह रख दिया कि डिब्बा ठीक छेद पर बैठ गया। फिर नीचे से लैम्प सरका दिया।

आखिर सब तैयार हो गया। हमने टीन के डिब्बे को पानी से भरा और लैम्प जला दिया। डिब्बे और नली का पानी गरम होने लगा। तापमापी का पारा चढ़ने लगा और थोड़ी ही देर में वह 39 डिग्री तक पहुँच गया। ताप और भी बढ़ जाता, अगर मीश्का की माँ उसी समय अन्दर न आ जातीं।

"अब तुम दोनों को क्या सूझी है? सब जगह से मिट्टी के तेल की गन्ध आ रही है!" उन्होंने कहा।

"हम इनक्युबेटर बना रहे हैं," मीश्का ने कहा।

"कैसा इनक्युबेटर?"

"अरे, वही जिससे अण्डों में से चूज़े निकल आते हैं।"

"चूज़े? क्या बक रहे हो?"

"देखो माँ, मैं तुम्हें दिखा ही देता हूँ। यहाँ अण्डों को रखा और यहाँ लैम्प..."

"भला, लैम्प किसलिए?"

"गर्मी देने के लिए। लैम्प का होना जरूरी है, वर्ना काम नहीं चलेगा।"

"बकवास है, मैं तुम्हें लैम्प को हाथ नहीं लगाने दूँगी। तुम उसको उलट दोगे और तेल में आग लग जाएगी। नहीं-नहीं, मैं यह नहीं होने दूँगी।"

"माँ, मेहरबानी करो, हम ध्यान रखेंगे।"

"न भई न, जलते हुए लैम्प के साथ मैं तुम्हें नहीं खेलने दूँगी। आखिर तुम चाहते क्या हो! पहले खौलते हुए पानी से हाथ जला लिया और अब घर जलाओगे!"

मीश्का ने ढेरों दलीलें दीं और खुशामदें कीं, लेकिन उसकी एक न चली।

मीश्का बेहद दुखी हो गया।

"मिट्टी में मिल गया हमारा इनक्युबेटर," वह बोला।

हमने रास्ता निकाल लिया

उस रात मैं काफी देर तक सो नहीं सका। पूरा एक घण्टा मैं इनक्युबेटर के बारे में ही सोचता रहा। पहले मैंने सोचा कि अपनी माँ से लैम्प माँग लूँ। लेकिन तुरन्त याद आया कि इससे कुछ न होगा। उन्हें वैसे ही आग से बहुत डर लगता है और वह हमेशा मझसे दियासलाई छिपाकर रखती हैं। इससे भी बुरी बात यह थी कि मीश्का की माँ ने लैम्प हमसे ले लिया था और वे किसी भी तरह उसे लौटाने को राज़ी नहीं थीं। घर में हर कोई गहरी नींद सो रहा था। एक मैं ही जागता हुआ अपने दिमाग को कुरेद रहा था।

और लो, यकायक मुझे एक ज़बरदस्त विचार सूझा – पानी गर्म करने के लिए बिजली के लैम्प का उपयोग क्यों न किया जाए?

मैं चुपके से उठा। मेज़ पर रखा लैम्प जलाया और उस पर उँगली रखकर देखने लगा कि वह गर्म होता है कि नहीं। वह तेज़ी से गर्म होने लगा। कुछ ही देर में इतना गर्म हो गया कि उस पर मैं उँगली नहीं रख सका। मैंने दीवार पर से तापमापी उतारकर लैम्प के ऊपर रखा। पारा उछलकर बिलकुल ऊपरी सिरे तक पहुँच गया। इसमें कोई शक नहीं कि लैम्प काफी गर्मी देता था।

प्रसन्न मन से मैंने तापमापी को उसकी जगह टाँग दिया और सो गया। अलबत्ता, उस रात के बाद तापमापी ने फिर कभी ठीक काम नहीं किया। इसका पता हमें कुछ देर बाद में चला। कमरे में ठण्ड होती, तापमापी को देखो, पारा शून्य के ऊपर 40 डिग्री! और कमरा ज़रा भी गर्म हुआ कि बस, पारा ठीक सिर पर जा चढ़ता और जब तक झटककर उसको नीचे न लाया जाता, वह वहीं जमा रहता। 30 डिग्री से कम ताप वह कभी भी न दिखाता। उसके हिसाब से तो ठेठ जाड़ों में भी हमें अँगीठी जलाने की ज़रूरत न पड़ती। लैम्प पर रखने के कारण वह मुझसे ही बिगड़ गया होगा।

दूसरे दिन मैंने मीश्का को अपना विचार बताया। हमने उसे तुरन्त ही आज़माने का फैसला किया। स्कूल से घर आते ही मैंने माँ से एक पुराना टेबल-लैम्प ले लिया। वह बरसों से अलमारी में पड़ा था। उसे मैंने बक्से में तेल के लैम्प की जगह रख दिया। मीश्का ने कुछ पुस्तकें लैम्प के नीचे रख दीं, जिससे वह पानी की टंकी के और पास आ गया। फिर मैंने लैम्प जला दिया। हमने तापमापी की ओर देखना शुरू किया। इसे मीश्का अपने घर से लाया था।

बहुत समय तक कुछ नहीं हुआ। पारा वहीं का वहीं बना रहा। हमें लग रहा था कि इस प्रयोग से कुछ भी हाथ नहीं आएगा। लेकिन कुछ समय बाद पानी गरम होने लगा और पारा भी ऊपर चढ़ने लगा।

आधे घण्टे में वह 39 डिग्री हो गया।

मीश्का खुशी से तालियाँ बजाकर चिल्ला पड़ा।

"वाह! अण्डे सेने के लिए बिलकुल यही ताप चाहिए! ठीक है, बिजली तेल का काम दे देगी!"

"इसमें क्या शक है!" मैंने कहा। "सच तो यह है कि बिजली तेल से बढ़कर है, क्योंकि तेल के लैम्प से आग लग जाने का खतरा रहता है। लेकिन बिजली के लैम्प में कोई खतरा नहीं होता।"

तभी हमने देखा कि पारा और भी चढ़ गया है और अब 40 डिग्री पर आ गया है।

"अरे!" मीश्का चिल्लाया। "देखो, वह और बढ़ गया है!"

"इसे किसी तरह रोकना होगा," मैं बोला।

"हाँ, लेकिन कैसे? अगर तेल का लैम्प होता, तो हम बत्ती नीची कर देते।"

"बिजली के लैम्प में बत्ती-वत्ती कुछ नहीं होती!"

"तुम्हारी बिजली बेकार है!" मीश्का ने नाराज़ होकर कहा।

मुझे भी गुस्सा आ गया, "मेरी बिजली? मेरी बिजली क्यों?"

"बिजली के लैम्प का विचार तुम्हारा ही था कि नहीं? पारे को देखो, 42 डिग्री हो गया है। अगर यह इसी तरह चढ़ता रहा, तो सभी अण्डे उबल जाएँगे और एक भी चूज़ा नहीं निकलेगा। इसमें सब कुछ ठीक रहना चाहिए।"

"रुको," मैंने कहा, "हम लैम्प को थोड़ा नीचे कर दें तो पानी इतनी जल्दी गर्म नहीं होगा और साथ-साथ ताप भी कम हो जाएगा।"

लैम्प के नीचे से हमने सबसे मोटी किताब हटा दी और नतीजे का इन्तज़ार करने लगे। पारा धीरे-धीरे नीचे सरकने लगा और 39 डिग्री तक आ गया। हमने राहत की साँस ली।

"अब सब कुछ ठीक है," मीश्का बोला। "हम अभी अण्डे सेना शुरू कर सकते हैं। मैं अपनी माँ से कुछ पैसे लूँगा। तुम भी अपनी माँ से ले लो। फिर हम दोनों मिलकर एक दर्जन अण्डे खरीद लेंगे।"

मैं दौड़कर अपनी माँ के पास गया और उनसे अण्डे खरीदने के लिए पैसे माँगने लगा। पहले माँ की समझ में ही नहीं आया कि मुझे अण्डे खरीदने की क्या जरूरत पड़ गई। आखिर मैंने उनको किसी तरह समझाया कि हमें अपने इनक्युबेटर के लिए अण्डों की जरूरत है।

"इससे कुछ नहीं होगा," माँ ने कहा। "मुर्गी के सेये बिना अण्डों से बच्चे निकालना आसान नहीं है। तुम लोग बेकार में समय खराब करोगे।"

लेकिन मैंने जिद पकड़ ली और आखिर उन्होंने पैसे दे ही दिए।

"ठीक है," माँ ने कहा। "लेकिन अण्डे कहाँ से खरीदोगे?"

"दुकान से," मैंने कहा। "और कहाँ से?"

"न, न" माँ ने कहा। "ऐसा नहीं करते। तुम्हारे पास ताजे अण्डे होने चाहिए, नहीं तो उनसे चूजे नहीं निकलेंगे।"

मैं दौड़कर मीश्का के पास गया और उसको सब कुछ बताया।

"कैसा हूँ मैं!" मीश्का ने कहा। "किताब में भी यही लिखा हुआ है। मैं बिलकुल भूल गया था।"

हमने शहर के पास वाले गाँव जाने का निश्चय किया। गर्मियों में हम वहाँ रह चुके थे। हमारी मकान मालकिन नताशा मौसी मुर्गियाँ पालती थीं और वहाँ ताजा अण्डे मिल जाने का हमें पूरा विश्वास था।

अगले दिन

ज़िन्दगी भी कैसी अजीब है। कल तक कहीं जाने की बात हमने सपने में भी नहीं सोची थी, और आज ट्रेन में बैठकर नताशा मौसी के गाँव जा रहे थे। हम इन अण्डों को जल्दी-से-जल्दी प्राप्त करके सेना चाहते थे। और इधर, यह कमबख्त ट्रेन जैसे हमारा मज़ाक उड़ाती हुई रेंगती जा रही थी। हमें लगा कि यात्रा बहुत लम्बी है। यह हमेशा की ही बात है। जब कभी हमें जल्दी होती है, हर बात झूठ-मूठ ही धीरे-धीरे होती है। अलावा इसके, मुझे और मीश्का को यह फिक्र थी कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे वहाँ पहुँचने पर नताशा मौसी न मिलें। फिर हम क्या करेंगे?

लेकिन सब ठीक रहा। नताशा मौसी घर पर ही थीं।

हमें देखकर वे बड़ी प्रसन्न हुईं। वे समझीं हम उनके साथ रहने आए हैं।

"हमें बड़ी खुशी होती, लेकिन हम अभी नहीं रह सकते," मीश्का ने कहा। "छुट्टियों से पहले हम ऐसा नहीं कर सकते।"

"हम काम से आए हैं," मैंने कहा। "हमें कुछ अण्डे चाहिए।"

"अण्डे! क्या बात है, शहर में आजकल अण्डे नहीं मिलते?" मौसी ने पूछा।

"नहीं, मिलते तो हैं," मीश्का बोला। "लेकिन हमें ताज़े अण्डे चाहिए।"

"क्या दुकानों में ताज़े अण्डे नहीं मिलते?"

"अण्डे मुर्गी के देते ही सीधे दुकान पर नहीं चले जाते, या चले जाते हैं?" मीश्का ने पूछा।

"हाँ, यह तो सच है, सीधे तो नहीं जाते।"

"हाँ, अब देखिए," मीश्का बोल उठा। "जब तक बहुत-से अण्डे नहीं हो जाते, वे इकट्ठा होते रहते हैं और उन्हें दुकान पर जाते-जाते तो शायद पूरा सप्ताह या दो सप्ताह भी लग जाते होंगे।"

"अच्छा, लेकिन इससे क्या?" नताशा मौसी बोलीं। "दो सप्ताह में अण्डे खराब तो नहीं होते।"

"ओह, यह बात है? लेकिन हमारी किताब में तो लिखा है कि दस दिन से ज्यादा पुराने अण्डों को सेना बेकार है।"

"क्या, अण्डे सेने हैं! तब तो बात दूसरी है," नताशा मौसी ने कहा। "इसके लिए सचमुच एकदम ताजे अण्डे ही चाहिए। लेकिन जो अण्डे हम खाते हैं, वे एक या दो महीने तक भी खराब नहीं होते। तुम्हें क्या मुर्गियाँ पालनी हैं?"

"अरे हाँ, इसीलिए तो हम यहाँ आए हैं," मैंने कहा।

"लेकिन अण्डे सेओगे कैसे?" नताशा मौसी ने पूछा। "इसके लिए तो मुर्गी होना जरूरी है।"

"नहीं, हमें मुर्गी की जरूरत नहीं है। हमने इसके लिए एक इनक्युबेटर बना लिया है।"

"क्या, इनक्युबेटर! भई वाह! लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि इनक्युबेटर से तुम करोगे क्या?"

"हम चूजे पैदा करना चाहते हैं।"

"किसलिए?"

"यूँ ही" मीश्का ने कहा। "चूजों के बिना मजा नहीं आता। देहात में रहने वाले आप लोगों के पास चूजे, गायें, सुअर, हंस – सभी कुछ होता है। लेकिन हमारे पास कुछ भी नहीं होता।"

"ठीक है, लेकिन हम देहात में रहते हैं। शहर में गाय अच्छी तरह नहीं पाली जा सकती।"

"शायद गाय नहीं पाली जा सकती, लेकिन छोटा जानवर तो पाला ही जा सकता है।"

"न, शहर में यह नहीं हो सकता। बड़ी मुश्किल उठानी पड़ती है," नताशा मौसी ने कहा।

"हमारे यहाँ एक आदमी ने पंछी पाल रखे हैं," मीश्का बोला। "उसके पास कितने ही पिंजरे हैं, जिनमें तरह-तरह की चिड़ियाँ हैं।"

"हाँ, लेकिन पंछियों को तो वह पिंजरों में रखता है। अपने चूजों को तुम पिंजरों में थोड़े ही रखोगे?"

"नहीं हम उनको रसोई-घर में रखेंगे। आप चिन्ता न कीजिए, हम उनके लिए कोई अच्छी जगह निकाल लेंगे। बस, हमें खूब बढ़िया अण्डे दे दीजिए। बिलकुल ताजे, नहीं तो उनमें से चूजे नहीं निकलेंगे।"

"बहुत अच्छा, ले लो," नताशा मौसी ने कहा। "मुझे मालूम है कि तुम्हें कैसे अण्डे चाहिए। मेरी मुर्गियों ने अभी-अभी अण्डे दिए हैं, इसलिए वे एकदम ताजे ही होंगे।"

नताशा मौसी रसोई-घर में गईं और वहाँ से ले आईं पन्द्रह सुन्दर अण्डे, हरेक चिकना, सफेद और

बिलकुल साफ था। उनको देखकर सहज ही जान पड़ता था कि वे ताजे हैं। मौसी ने उनको हमारी टोकरी में रख दिया और एक ऊनी दुशाले से उनको ढँक दिया, ताकि रास्ते में वे ठण्डे न हो जाएँ।

"अच्छा, जाओ। खुश रहो। अपने काम में सफल हो," नताशा मौसी ने दरवाजे तक आकर हमें विदा करते हुए कहा।

अब बाहर अँधेरा फैलने लगा था। हम दोनों जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर बढ़े।

घर पहुँचने में हमें बहुत देरी हो गई और माँ ने मुझे खूब झिड़कियाँ दीं। मीश्का को भी उसकी माँ ने खूब झाड़ा। लेकिन हमें इससे जरा भी दुख न हुआ। दुख हुआ इस बात का कि रात में बहुत देर होने के कारण अण्डों को सेने का काम हमें दूसरे दिन के लिए रखना पड़ा।

शुरुआत

दूसरे दिन स्कूल से आते ही हमने इनक्युबेटर में अण्डे रख दिए। उनके लिए वहाँ काफी जगह थी। इतना ही नहीं, कुछ जगह खाली भी रह गई।

हमने इनक्युबेटर पर ढक्कन लगाया, तापमापी को ठीक जगह पर रख दिया और लैम्प का बटन दबाने ही वाले थे कि मीश्का बोला, "ठहरो, पहले जरा यह देख लें कि सब ठीक हुआ है या नहीं। शायद, इनक्युबेटर को गर्म करने के बाद अण्डों को अन्दर रखना होगा।"

"मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता," मैंने कहा। "देखें, पुस्तक में क्या लिखा है।"

मीश्का ने पुस्तक उठाई और पढ़ने लगा। देर तक पढ़ने के बाद वह बोला, "देखा, हम उनका दम घोंटने जा रहे थे।"

"किनका?"

"अण्डों का। पता चला कि वे जानदार हैं।"

"जानदार हैं?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, हाँ। देखो पुस्तक में क्या लिखा है। '...अण्डों में यद्यपि जीवन प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता, तो भी वे सजीव होते हैं। जीवन अभी अदृश्य होता है। लेकिन अण्डे को गर्मी मिलने से उसमें चेतना आ जाती है। धीरे-धीरे भ्रूण बच्चे का आकार लेने लगता है और अन्त में छोटा-सा बच्चा निकल आता है। सभी प्राणियों की तरह अण्डे भी साँस लेते हैं... ' समझे! अण्डे साँस लेते हैं – बिलकुल हमारी-तुम्हारी तरह।"

"बकवास!" मैंने कहा। "हम तो मुँह से साँस लेते हैं। भला, अण्डे किससे साँस लेते हैं?"

"धत्, हम मुँह से नहीं, फेफड़ों से साँस लेते हैं। हवा नाक-मुँह से होकर फेफड़ों में ही जाती है। अण्डों नें खोल से होकर हवा जाती है और इस तरह वे साँस लेते हैं।"

"ठीक है, वे साँस लेना चाहते हैं, तो लें" मैंने कहा। "हम थोड़े ही उन्हें मना करते हैं।"

"लेकिन बन्द पेटी में वे कैसे साँस ले सकते हैं? सुनो, साँस लेते समय हम कार्बन डायऑक्साइड छोड़ते

हैं। अगर तुम्हें पेटी में बन्द करके रखा जाए, तो तुम ताज़ी हवा नहीं पा सकोगे। तुम कार्बन डायऑक्साइड छोड़ते जाओगे और आखिर में वह इतनी ज्यादा हो जाएगी कि तुम्हारा दम घुट जाएगा।"

"मैं क्यों पेटी में बन्द होने लगा? मैं दम घुटकर मरना नहीं चाहता," मैंने कहा।

"बिलकुल ठीक, और यही बात अण्डों के बारे में भी है। लेकिन हमने तो उन्हें पेटी में बन्द किया है।"

"तो अब हमें क्या करना होगा?"

"पेटी में हवा के आने-जाने का प्रबन्ध करना होगा," मीश्का ने कहा। "सभी सचमुच के इनक्युबेटरों में हवा के आने-जाने का प्रबन्ध होता है।"

अण्डों में से एक भी टूट न जाए, इसकी सावधानी रखते हुए हमने उनको बक्से से निकालकर टोकरी में रख दिया। मीश्का एक बरमा लाया और उसने इनक्युबेटर में कई छोटे-छोटे छेद कर दिए, ताकि उनमें से होकर कार्बन डायऑक्साइड बाहर निकल जाए।

जब यह काम पूरा हो गया, तो हमने अण्डों को फिर पेटी में रखा और ढक्कन लगा दिया।

"सिर्फ एक मिनट," मीश्का बोला। "अब तक हमें यह नहीं मालूम हुआ है कि पहले क्या करना चाहिए – इनक्युबेटर को गरम करना या अण्डों को रखना।"

उसने फिर पुस्तक का सहारा लिया।

"हम अब भी गलती कर रहे हैं," कुछ देर बाद उसने कहा। "यहाँ लिखा हुआ है कि इनक्युबेटर के भीतर की हवा नम होनी चाहिए, क्योंकि अगर वह सूखी रही, तो अण्डे के अन्दर का तरल पदार्थ भाप बनकर खोल से उड़ जाएगा और भ्रूण नष्ट हो जाएगा। इसलिए इनक्युबेटर में पानी से भरे कटोरे रखने चाहिए। पानी की भाप बनती जाएगी और उससे हवा नम रहेगी।"

हमने अण्डों को फिर बाहर निकाला और पानी के गिलास अन्दर रखने लगे। पर वे इतने लम्बे थे कि ढक्कन लगाना असम्भव हो गया। हम किसी छोटे बर्तन की तलाश करने लगे, लेकिन हमें कुछ नहीं मिला। तभी मीश्का को याद आया कि उसकी छोटी बहन माया के खिलौनों में लकड़ी की कुछ कटोरियाँ हैं।

"हम माया की कुछ कटोरियाँ ले लें तो?" उसने कहा।

"वाह, क्या बात है!" मैंने कहा। "जाओ, ले आओ।"

मीश्का ने माया के खिलौने ढूँढकर, उनमें से लकड़ी की चार कटोरियाँ चुन लीं। वे आकार में बिलकुल ठीक निकलीं। हमने उनको पानी से भरकर इनक्युबेटर के भीतर, हर कोने में एक-एक करके रख दिया। लेकिन जब हम अण्डों को फिर से रखने लगे, तो देखा कि अब वहाँ सिर्फ बारह अण्डों की जगह थी। तीन अण्डे बाकी रह गए।

"कोई बात नहीं," मीश्का बोला। "बारह चूज़े भी काफी होंगे। ज्यादा का हम क्या करेंगे? उनको खिलाने के लिए हमारे पास इतना दाना भी तो होना चाहिए।"

उसी समय माया अन्दर आई। जब उसने देखा कि उसकी कटोरियाँ इनक्युबेटर में हैं, तो वह चीखने-चिल्लाने लगी।

"सुनो," मैंने कहा। "हम इन्हें सदा के लिए तो ले नहीं रहे। आज से इक्कीस दिन बाद ये तुम्हें वापस मिल जाएँगी। तुम चाहो, तो उनके बदले हम तुम्हें तीन अण्डे अभी दे सकते हैं।"

"अण्डे लेकर मैं क्या करूँगी? वे तो खाली हैं!"

"नहीं, खाली नहीं हैं। उनमें ज़र्दी, सफेदी सभी कुछ तो है।"

"लेकिन उनमें चूज़े तो नहीं हैं, न!"

"देखो, जब अण्डों में से चूज़े निकल आएँगे, तो हम तुम्हें एक दे देंगे।"

"सच्ची-मुच्ची?"

"हाँ, सच्ची। लेकिन अब यहाँ से भाग जाओ और हमें परेशान न करो। हम वैसे ही मुश्किल में हैं कि शुरू कैसे करें। हमारी समझ में यह नहीं आ रहा कि अण्डे रखने के बाद इनक्युबेटर को गरम किया जाए या इनक्युबेटर को गरम करने के बाद अण्डे रखे जाएँ।"

मीश्का ने फिर पुस्तक देखी और जाना कि यह किसी भी तरह से किया जा सकता है।

"बहुत ठीक," मैं बोला। "चलो, बिजली का बटन दबाओ और काम शुरू करें।"

"मुझे जरा घबराहट हो रही है," मीश्का ने कहा। "लैम्प तुम जलाओ तो ज़्यादा ठीक रहेगा, क्योंकि मेरी किस्मत हमेशा खोटी रहती है।"

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो?"

"बस, किस्मत ही खोटी है, और क्या। मेरा किया कोई काम कभी पूरा नहीं होता।"

"मेरी भी यही बात है," मैंने कहा। "मेरी किस्मत भी हमेशा खराब रहती है।"

अब हम दोनों को वे सभी बातें याद आने लगीं जो हमारे जीवन में घटी थीं। और आखिर यह सिद्ध हुआ कि हम दोनों बड़े अभागे रहे हैं।

"ऐसे काम को हम शुरू करें तो किसी का कोई फायदा नहीं होगा," मीश्का ने कहा। "वह हर हालत में बिगड़ जाएगा।"

"हम माया से करवा लें तो," मैंने कहा।

मीश्का ने अपनी बहन को अन्दर बुलाया।

"सुनो माया," मैंने कहा। "क्या तुम किस्मतवाली हो?"

"हाँ-हाँ।"

"तुम्हारा कभी कोई काम अधूरा रहा है?"

"नहीं, कभी नहीं।"

"बड़ी अच्छी बात है! देखो माया, पेटी में वह लैम्प है न?"

"हाँ।"

"ठीक, तुम जरा उसका बटन तो दबा दो।"

माया इनक्युबेटर के पास गई और उसने बटन दबा दिया।

"कुछ और?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं," मीश्का बोला। "अब भाग जाओ और हमें तंग मत करो।"

माया नाराज होकर चली गई। हमने जल्दी-जल्दी ढक्कन लगाया और तापमापी को देखना शुरू किया। पहले पारा 18 डिग्री पर ही रुका रहा, लेकिन धीरे-धीरे वह बढ़ने लगा और 20 डिग्री तक पहुँच गया। इसके बाद जरा तेजी से बढ़कर वह 25 डिग्री तक चला गया, लेकिन 30 डिग्री होने पर वह फिर धीमी चाल से बढ़ने लगा। आधे घण्टे में वह 36 डिग्री तक चढ़ गया और फिर वहीं रुक गया। मैंने लैम्प के नीचे एक और पुस्तक रख दी। इससे पारा फिर चढ़ने लगा। वह 39 डिग्री तक चढ़ा और फिर चढ़ता ही चला गया।

"ठहरो!" मीश्का चिल्लाया। "देखो, वह 40 डिग्री हो गया है। यह किताब ज्यादा मोटी है।"

मैंने किताब निकाल ली और उसके बदले एक पतली किताब रख दी। पारा नीचे आने लगा। वह 39 डिग्री तक आ गया, और फिर भी गिरता रहा।

"यह बहुत पतली है," मीश्का बोला। "ठहरो, मैं एक कॉपी ले आता हूँ।"

वह दौड़कर एक कॉपी लाया और उसे लैम्प के नीचे घुसा दिया। पारा फिर से चढ़ने लगा, 39 डिग्री तक गया और वहीं रुक गया। हमने तापमापी पर आँखें गड़ाए रखीं। पारा अचल था।

"वह रहा," मीश्का फुसफुसाया। "यही ताप हमें इक्कीस दिन तक लगातार कायम रखना है। क्या ख्याल है, हम रख लेंगे?"

"बेशक, रख सकते हैं," मैंने कहा।

"क्योंकि अगर हम नहीं रख सके, तो हमारा सारा काम बेकार हो जाएगा।"

"लेकिन हम ज़रूर रखेंगे। किसने कहा कि हम नहीं रख पाएँगे!"

सारा दिन हम इनक्युबेटर के पास बैठे रहे। हमने स्कूल का अभ्यास तक तापमापी पर नजर रखे-रखे ही किया। वह 39 डिग्री पर था।

"सब-कुछ ठीक चल रहा है," मीश्का ने सहर्ष कहा। "अगर हमने इसे कायम रखा तो ठीक इक्कीस दिन बाद हमें चूज़े मिल जाएँगे। जरा सोचो तो, बारह नन्हे-नन्हे रोएँदार चूज़े! कैसा प्यारा कुनबा होगा उनका!"

ताप गिरा

दूसरे लड़कों की बात तो पता नहीं, पर अपने को तो रविवार के दिन देर तक सोते रहना अच्छा लगता है। रविवार को न तो स्कूल होता है और न कहीं बाहर जाने की जल्दी। सप्ताह में एक दिन आदमी आराम से सो सकता है। और मुझसे पूछें, तो इसमें कोई बुराई भी नहीं है। अगला ही दिन रविवार था लेकिन न जाने क्यों मैं बहुत जल्दी जाग गया। सूरज अभी नहीं निकला था, फिर भी उजाला काफी था। मैं करवट बदलकर फिर सोने को था कि यकायक मुझे इनक्युबेटर की याद आई। मैं बिछौने से कूदा, जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और दौड़ता हुआ मीश्का के घर पहुँचा। मीश्का ने खुद ही दरवाजा खोला।

"श्श—," वह फुसफुसाया। "तुम सबको जगा दोगे। भला, इतने तड़के यहाँ आने की क्या सूझी? और घण्टी तो इस तरह बजाई जैसे घर में आग लग गई हो!"

वह रात के कपड़े पहने हुए था और उसके पैर नंगे थे।

"लेकिन तुम तो जाग गए हो न?" मैंने पूछा।

"जाग गया हूँ!" मीश्का गुर्राया। "अजी जनाब, अब तक तो सोया ही नहीं।"

"क्यों?"

"इस कमबख्त इनक्युबेटर के कारण।"

"क्यों, आखिर हुआ क्या?"

"गिरता रहता है।"

"लेकिन क्यों? कल तो खूब जमा खड़ा था।"

"अरे इनक्युबेटर नहीं, पागल! मेरा मतलब ताप से है।"

"लेकिन क्यों?"

"यही तो मैं जानना चाहता हूँ। जब मैं सोने गया, तब सब कुछ ठीक था, लेकिन अपने चूजों के बारे में सोचता-सोचता मैं बहुत देर तक नहीं सो सका। थोड़ी देर बाद इनक्युबेटर का हाल देखने उठा। रसोई-घर में दौड़ता हुआ गया और देखा – पारा 38.5 डिग्री तक गिर आया है! लैम्प के नीचे मैंने एक और पुस्तक ठूँस दी और ताप के 39 डिग्री होने तक इन्तजार करता रहा। अच्छा हुआ कि मैं सोया नहीं था, वरना अपने चूजों का तो खात्मा हो ही जाता।

इसके बाद, फिर से सो जाने की बजाय मैंने कुछ देर और इन्तज़ार करके देखते रहने का फैसला किया। एक घण्टा गुजर गया, दो घण्टे बीत गए और ताप वही रहा। सिर्फ बैठे रहने से मैं ऊब गया था। इसलिए मैंने एक किताब पढ़ना शुरू कर दिया। मैं उसमें इतना रम गया कि तापमापी को बिलकुल भूल ही गया। और जब उस पर निगाह डाली तो ताप फिर 38.5 डिग्री था। वह आधा डिग्री और गिर गया था। मैंने एक और कॉपी उसके नीचे रख दी। ताप फिर ठीक हो गया। देखो, इस वक्त वह अचल है, लेकिन कहा नहीं जा सकता कि बाद में क्या होगा!"

"अच्छा, अब तुम जाकर सो जाओ," मैंने कहा। "मैं कुछ देर यहीं रुककर निगरानी रख लूँगा।"

"सोने का अब क्या फायदा?" मीश्का बोला। "दिन काफी निकल आया है।"

ज़रा-सी भी आवाज न करते हुए वह अपने कमरे में गया। अपने कपड़े ले आया और पहनने लगा। उसने पतलून और कमीज पहनी, जूते में फीते बाँधे, फिर सोफे पर लेट गया और तुरन्त नींद में खो गया। "मैं उसको नहीं जगाऊँगा," मैंने सोचा। "आखिर आदमी को कभी तो कुछ नींद मिलनी चाहिए।"

मैं इनक्युबेटर के पास बैठ गया और तापमापी की ओर सावधानी से देखने लगा। कुछ समय बाद खाली बैठे रहने से मैं ऊब गया। इसलिए मैंने *मुर्गी पालन* की किताब उठा ली और इनक्युबेटर के बारे में पढ़ने लगा। उसमें लिखा हुआ था कि अगर अण्डे एक ही स्थिति में रहें, तो खोल के भीतर भ्रूण के चिपक जाने की सम्भावना रहती है और ऐसी हालत में बच्चे कुरूप, दुबले-पतले और टेढ़े-मेढ़े या मरे हुए भी पैदा हो सकते हैं। भ्रूण खोल से चिपक न जाए, इसलिए अण्डों को हर तीन घण्टे के बाद पलट देना जरूरी है।

मैंने इनक्युबेटर को खोला और अण्डों को पलटना शुरू किया। उसी समय मीश्का जाग उठा। जब उसने देखा कि मैंने इनक्युबेटर खोल दिया है, तो वह चिल्लाते हुए उछल पड़ा–

"ऐं, क्या कर रहे हो!"

मैं इतना डर गया कि एक अण्डा मेरे हाथ से लगभग गिर ही पड़ा।

"कुछ नहीं," मैंने कहा

"कुछ नहीं, यानी? इनक्युबेटर क्यों खोला? मैंने कह जो रखा था कि हमें इक्कीस दिन ठहरना पड़ेगा। तुम्हारा क्या यह ख्याल है कि एक ही दिन में अण्डों में से चूज़े निकल आएँगे!"

"मेरा ऐसा कोई ख्याल नहीं है," मैंने कहा। मैंने उसको यह समझाने की कोशिश की कि अण्डों को हर तीन घण्टे के बाद पलट देना चाहिए, लेकिन उसने मेरी ओर ध्यान तक नहीं दिया और ऊँचे स्वर में चिल्लाता रहा-

"ढक्कन बन्द करो! मैं कह रहा हूँ, बन्द कर दो! आदमी मिनट भर को भी सो नहीं सकता। मैंने इधर ज़रा आँखें बन्द कीं और उधर तुमने इनक्युबेटर खोल दिया।"

"मुझे उसे खोलने की क्या जरूरत थी?" मैंने कहा।

उसने लपककर ढक्कन लगा दिया, लेकिन उस समय तक मैं सारे अण्डों को पलट चुका था।

मीश्का ने इतना हंगामा मचाया था कि उसके माता-पिता दौड़ते हुए आ गए।

"क्यों इतना चिल्ला रहे हो?" उन्होंने पूछा।

"इस गधे ने जाकर इनक्युबेटर खोल दिया," मीश्का बोला।

मैंने बताया कि अण्डों को पलटना जरूरी है, नहीं तो चूजे लूले-लंगड़े पैदा होंगे।

"किसने ऐसा कहा है?" मीश्का बोला। "मुर्गियाँ जब अण्डों को सेती हैं तो लूले-लंगड़े चूजे क्यों नहीं पैदा होते?"

"जब मुर्गियाँ अण्डों को सेती हैं, तब वे हमेशा उनको पलटती रहती हैं," मीश्का की माँ ने कहा।

"भला मूर्ख मुर्गी कैसे समझ सकती है कि अण्डों को पलट देना चाहिए?" मीश्का ने पूछा।

"जितना तुम समझते हो वह उतनी मूर्ख नहीं होती," मीश्का की माँ ने उत्तर दिया।

क्षण भर मीश्का सोचता रहा।

"ओह, अब मुझे याद आया। मैंने ही उन्हें अण्डों को पलटते हुए देखा है," आखिर वह बोला। "मुझे हमेशा आश्चर्य होता था कि क्यों ये अपनी नाक से अण्डों को धकेलती रहती हैं।"

"रे बद्धू" वह बोलीं, "नाकवाली मुर्गी तूने कहाँ देखी?"

"मेरा मतलब चोंच से था। लेकिन वही तो मुर्गी की नाक भी है।"

ताप बढ़ा

लगभग दस बजे किसी कारण तापमापी में पारा आधा डिग्री चढ़ गया, इसलिए लैम्प ज़रा नीचे करने के लिए हमें एक कॉपी निकालना पड़ी।

"इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता।" मीश्का ने हैरानी से कहा। "सारी रात ताप नीचे जाता रहा और अब फिर चढ़ता जा रहा है। अजीब बात है।"

दोपहर के खाने से पहले ताप और बढ़ जाने के कारण हमें लैम्प फिर नीचे करना पड़ा।

खाने के बाद मीश्का सोफे पर लेट गया और फिर से सो गया। बैठे-बैठे मैं कुछ अकेला-सा महसूस करने लगा, इसलिए अपने एलबम में सोए हुए मीश्का के चित्र बनाने लगा। सोते हुए लोगों के चित्र बनाना हमेशा आसान रहता है, क्योंकि यही एक समय है जब कोई स्थिर रहता है।

थोड़ी देर बात कोस्त्या देव्यात्किन अन्दर आया। मीश्का को सोते देख उसने पूछा, "इसे क्या हुआ है, नींद की बीमारी?"

"नहीं," मैंने कहा। "ज़रा झपकी ले रहा है।"

कोस्त्या ने आगे बढ़कर मीश्का के कन्धे को झँझोड़ दिया। "उठो भाई, कितना सोओगे?"

मीश्का उछल पड़ा।

"ऐं, क्या हुआ? सबेरा हो गया?"

"सबेरा!" कोस्त्या हँस पड़ा। "जनाब, शाम होने को है, शाम। चलो, उठो और बाहर खेलने चलो। देखो तो, सूरज चमक रहा है और पंछी गा रहे हैं।"

"खेलने के लिए हमारे पास समय नहीं है। हमें काम करना है!" मीश्का बोला।

"कौन–सा काम?"

"बड़ा जरूरी काम है।"

मीश्का इनक्युबेटर के पास गया, तापमापी की ओर देखा और चीख पड़ा–

"ऐं, तुम क्या कर रहे हो! बाजार के बकरे की तरह सिर्फ बैठे हो? देखा, यहाँ क्या हो गया है!"

मैंने तापमापी को देखा। पारा फिर 39.5 डिग्री पर था। मीश्का ने जल्दी–जल्दी लैम्प नीचे किया।

"मैं कहता हूँ कि अगर मैं नहीं उठ गया होता तो तुम उसको 40 डिग्री तक चले जाने देते!" वह गुर्राकर बोला।

"तुम हमेशा खुर्राटे लेते रहो तो यह मेरा कसूर नहीं है।"

"यह मेरा कसूर है कि मैं सारी रात नहीं सोया?"

"मेरा भी तो नहीं है," मैंने कहा।

कोस्त्या ने इनक्युबेटर को देखा। "यह क्या है? कोई नया भाप का इंजन?" उसने पूछा।

"बको मत, क्या यह भाप का इंजन जैसा लगता है?"

"अच्छा तो तुम ही कहो क्या है?"

"पहचानो!"

"अं...!" सिर खुजलाते हुए कोस्त्या बोला, "निश्चित ही भाप-टर्बाइन है।"

"बिलकुल गलत। फिर कोशिश करो!"

"ठीक है। तो शायद जेट-इंजन है।"

मीश्का और मैं ठहाका मारकर हँस पड़े। "तुम सैकड़ों साल सोचते रहो तो भी सही नहीं बता सकोगे!"

"अच्छा, तो बताओ क्या है?"

"इनक्युबेटर।"

"ओ, इनक्युबेटर! अब समझा! यह किसलिए है?"

"तुम्हें मालूम नहीं इनक्युबेटर किसलिए होता है?" मीश्का ने पूछा। "यह चूजे निकालता है।"

"किससे?"

"अरे मूर्ख, अण्डों से, और किससे?" मीश्का ने चिढ़कर कहा।

"ओहो, अण्डों से! तब ठीक है। मतलब यह कि इनक्युबेटर मुर्गी के बदले काम करता है। मैं इसके बारे में सब कुछ जानता हूँ, लेकिन मेरा ख्याल था कि इसे हेनकूपेटर कहते हैं। और अण्डे कहाँ हैं?"

"यहाँ पेटी में।"

"जरा दिखा दो, न।"

"बिलकुल नहीं। अगर हर किसी को हम दिखाने लगें तो चूजे कभी पैदा नहीं होंगे। हाँ, अगर चाहो तो उनको पलटने के समय तक ठहर सकते हो। तब तुम देख भी लोगे।"

"यह कब होगा?"

मीश्का ने और मैंने जल्दी से कुछ हिसाब किया और उससे पता चला कि आठ बजे अण्डों को पलटा जाएगा।

कोस्त्या ने कहा कि वह ठहर जाएगा। मीश्का शतरंज ले आया और हम खेलने बैठ गए।

सच कहें तो तीन जनों के शतरंज में कोई मज़ा नहीं है। क्योंकि असल में खेलते तो दो ही जने हैं। तीसरा सिर्फ पास में बैठकर सलाह देता रहता है। और इससे कुछ फायदा भी नहीं होता। अगर तुम जीत गए तो कहा जाएगा कि तुम्हें मदद मिली थी। और अगर हार गए तो खिल्ली उड़ाई जाएगी। यह कहा जाएगा कि मदद मिलने के बावजूद तुम हार गए। शतरंज एक ऐसा खेल है जिसे सिर्फ दो लोगों को ही खेलना चाहिए और वह भी किसी के दखल दिए बिना।

आखिर घड़ी ने आठ बजाए। मीश्का ने इनक्युबेटर खोला और अण्डों को उलटना शुरू किया। कोस्त्या ने पास खड़े रहकर गिनना शुरू किया।

"दस, ग्यारह," उसने गिन लिया। "ग्यारह अण्डे। तो तुम्हारे पास ग्यारह चूज़े हो जाएँगे?"

"ग्यारह?" मीश्का ने आश्चर्य से दोहराया। "तुमने गलत गिना है। वे बारह थे। किसी ने एक अण्डा ले तो नहीं लिया? यह बड़ी शर्म की बात है। इधर जरा-सी झपकी ली और उधर अण्डा गायब! और तुम क्या कर रहे थे?" वह मुझ पर टूट पड़ा। "तुम तो निगरानी कर रहे थे न?"

"सो तो मैं कर रहा था। सारा समय मैं यहाँ था। चलो, हम फिर से गिन लें। कोस्त्या ने जरूर गलती की है।"

मीश्का ने गिनती की और अब अण्डे तेरह हो गए।

"देखो," वह गुर्राया। "अब एक अण्डा ज्यादा है। इसे किसने रखा होगा?"

तब मैंने गिनती की। अण्डे ठीक बारह निकले।

"वाह रे गिनने वाले!" मैंने कहा। "बारह तक भी ठीक गिनना नहीं आता!"

"ओह," मीश्का रुआँसा होकर बोला। "मैंने यहाँ अण्डे गड्डमड्ड कर दिए। एक अण्डा पलटना बाकी था और मुझे याद नहीं कि वह कौन-सा है।"

वह याद करने की कोशिश में था कि तभी माया दौड़ती हुई आई। वह सीधे इनक्युबेटर के पास गई और सबसे बड़े अण्डे की ओर संकेत करके बोली, "इसमें मेरा चूजा है।"

मीश्का को और मुझे गुस्सा आ गया और हमने उसे दूर हटा दिया।

"अगर तुम फिर यहाँ आकर हमें तंग करोगी तो याद रखना, तुम्हें कोई भी चूजा नहीं मिलेगा, हमने कह दिया।"

माया रोने लगी।

"तुमने कटोरियाँ ले लीं। मैं जितना चाहूँ देख सकती हूँ।"

"ओहो, यह बात है? हम भी देख लेंगे," मीश्का ने उसे बाहर धकेलकर दरवाजा अच्छी तरह बन्द करते हुए कहा।

"अब क्या करें?" मैंने पूछा। "क्या सब अण्डों को फिर से पलट दें?"

"नहीं, यह ठीक नहीं होगा, क्योंकि शायद हम उनको पलटकर फिर से उसी तरह रख देंगे, जैसे वे पहले थे। इससे अच्छा यह होगा कि वही एक अण्डा पहले जैसा रहे। आगे हम अधिक सावधान रहेंगे।"

"तुम्हें अण्डों पर निशान लगा देना चाहिए, जिससे तुम्हें पता रहे कि कौन-सा अण्डा तुमने पलट दिया है और कौन-सा नहीं," कोस्त्या ने सुझाव दिया।

"कैसे?" मीश्का ने पूछा।

"उन पर तुम गुणा का चिन्ह लगा सकते हो।"

"नहीं, मैं संख्या लिखूँगा।"

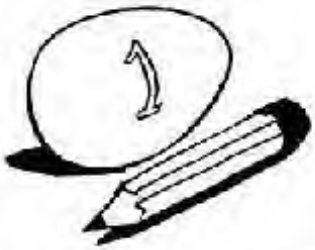

मीश्का ने पैंसिल ली और एक से बारह तक की संख्याएँ क्रमशः सब अण्डों पर लिख दीं।

"अगली बार पलटते समय संख्या नीचे की ओर रहेगी और उसके बाद फिर संख्या ऊपर की ओर जाएगी। अब गलती होना असम्भव है," मीश्का ने कहा और इनक्युबेटर को बन्द कर दिया।

कोस्त्या जाने लगा तो मीश्का ने उससे कहा, "हमारे इनक्युबेटर के बारे में स्कूल में किसी से मत कहना।"

"भला क्यों?"

"पता नहीं...शायद वे हमारी खिल्ली उड़ाएँ।"

"खिल्ली क्यों उड़ाएँगे? इनक्युबेटर बड़े काम की चीज़ है।"

"देखो, तुम जानते हो कि लड़के कैसे हैं। वे हम दोनों को मुर्गियों का जोड़ा कहेंगे। और मान लो कि यह असफल रहा, तब तो हम किसी को मुँह दिखाने लायक भी नहीं रह जाएँगे।"

"लेकिन असफल होगा ही क्यों?"

"कुछ भी हो सकता है। बात उतनी आसान नहीं जितनी तुम समझते हो। हो सकता है कि हम सब गलत ही कर रहे हैं। इसलिए तुम इस बारे में चुप रहो।"

"ठीक है," कोस्त्या बोला। "मैं चुप रहूँगा।"

माया ने हाथ बँटाया

"कैसा चल रहा है?" दूसरे दिन मीश्का से मिलने पर मैंने पूछा।

"ठीक है। बस, रात भर ताप फिर कम होता रहा।"

"तो क्या तुम कल रात भी नहीं सोए?"

"नहीं, अब मैं ज़रा होशियार बन गया हूँ। मैंने अपने तकिए के नीचे अलार्म घड़ी रख ली थी, जो मुझे हर तीन घण्टे बाद जगा देती थी।"

"लेकिन ताप क्यों कम हुआ? दिन भर तो वह बढ़ता ही रहा था," मैंने कहा।

"अब मुझे पता चल गया है," मीश्का ने कहा। "रात को ठण्ड अधिक रहती है, इसलिए इनक्युबेटर भी जल्दी ठण्डा पड़ जाता है। लेकिन दिन में गर्मी रहती है इसलिए दिन में ताप बढ़ता रहता है और रात में घटता है।"

"लेकिन इसका क्या इलाज करें?" मैंने उससे पूछा। "हम जब तक स्कूल में रहेंगे, तब तक ताप की निगरानी कौन करेगा?"

"शायद माया कर ले। हम उससे कहते हैं।"

मीश्का ने माया को बुलाया और पूछा कि क्या वह हमारे स्कूल के समय इनक्युबेटर पर निगरानी रख लेगी।

"न भाई न, यह काम मुझसे नहीं होगा," माया बोली। "कल ही तुम लोगों ने मुझे कमरे से निकाल दिया था और अब मदद करने को कहते हो।"

"सुनो माया," मैंने कहा। "तुम यह तो नहीं चाहती न कि चूज़े मर जाएँ? लेकिन अगर हमने उनका ध्यान न रखा तो वे मर जाएँगे और यही हालत तुम्हें दिए जाने वाले चूज़े की भी होगी। हम तुमसे अपनी मदद के लिए नहीं कह रहे हैं, लेकिन चूज़ों की तो मदद करो।"

मेरे कहने पर वह ना नहीं कर सकी। इसके बाद मैंने उसको काम के बारे में समझा दिया।

"इस तापमापी को देखो," मैंने कहा। "पारा ठीक 39 डिग्री पर रहना चाहिए। 39 डिग्री..... याद रहेगा?"

"हाँ, हाँ।"

निश्चिन्त होने के लिए जिस जगह पारा टिका रहना चाहिए था, वहाँ मैंने लाल पेंसिल से निशान लगा दिया।

"देखो, गड़बड़ा मत देना," मैंने कहा। "पारा ज़रा-सा भी चढ़ा कि तुम फौरन लैम्प के नीचे से एक कॉपी निकाल देना। जब लैम्प नीचे होता है तो पारा भी नीचे आ जाता है। समझी?"

"हाँ, समझ गई।"

इसके बाद मैंने उसको दिखाया कि अण्डों को कैसे पलटा जाता है और कहा कि ग्यारह बजते ही उसे इनक्युबेटर खोलकर अण्डों को पलट देना होगा।

माया सारी बात समझ गई। फिर भी मैंने उससे सभी हिदायतें दोहराने के लिए कहा, जिससे भरोसा हो जाए कि उसने सब कुछ ठीक समझ लिया है। इसके बाद मीश्का और मैं स्कूल चले गए।

"कहो, कैसा चल रहा है तुम्हारा इनक्युबेटर?" क्लास में प्रवेश करते ही कोस्त्या ने पूछा।

"श–श–श," किसी ने सुन तो नहीं लिया, यह देखने के लिए उसके कन्धे पर से दृष्टि डालते हुए मीश्का फुसफुसाया।

"मैं तो फुसफुसाया था।"

"फुसफुसाया था!" मीश्का गुर्राया। "तुम तो जोर से चीख रहे थे।"

"जाने दो यार, मैं चुप रहूँगा। लेकिन सुनो, मुझे और लड़कों को भी बताने दो न।"

"अगर तुमने ऐसा किया तो फिर कभी हमारे पास मत आना। तुमने इस बात को गुप्त रखने का वचन दिया था और अब तुम...."

"न भाई न, मैं बिलकुल चुप रहूँगा। लेकिन मुझे एक शानदार बात सूझी है। प्राकृतिक इतिहास के घण्टे में मैं मारिया पेत्रोव्ना को तुम्हारे इनक्युबेटर के बारे में बताऊँगा। वे बहुत खुश होंगी।"

"जरा कहकर तो देखो ! तुम मारिया पेत्रोव्ना से कहोगे तो पूरी क्लास सुन लेगी।"

"ठीक है, नहीं कहूँगा। अब मैं मुर्दे की तरह खामोश रहूँगा।"

कोस्त्या अपने मुँह को हाथ से ढँककर वहाँ से चला गया। लेकिन साफ नजर आता था कि हमारे इनक्युबेटर की बात किसी से कहने के लिए वह बैचेन हो रहा है।

पाठ शुरू हुए। लेकिन इनक्युबेटर की चिन्ता के मारे मीश्का से चुप नहीं बैठा जा रहा था।

"माया ने कुछ गलती कर दी तो?"

"लेकिन वह कर क्या सकती है?"

"तापमापी को देखना ही भूल जाए।"

"लेकिन मैंने उसे सख्त ताकीद कर दी है।"

"मान लो वह घर बैठे-बैठे ऊबकर बाहर खेलने चली जाए?"

"उसने वायदा किया है कि नहीं जाएगी।"

"और अगर उसने इनक्युबेटर में रखी अपनी कटोरियाँ ले लीं, तो?"

"वह ऐसा कुछ नहीं करेगी।"

"हो सकता है बल्ब ही खराब हो जाए। तो फिर हम क्या करेंगे?"

प्राकृतिक इतिहास के घण्टे में मीश्का ने इतनी बातचीत की कि मारिया पेत्रोव्ना ने हमें अलग कर दिया। क्लास की दूसरी ओर से मुझे घूरता हुआ मीश्का बरसाती बादल के समान बैठा था। और मानो मामले को अधिक बिगाड़ देने के लिए ही कोस्त्या अपने मुँह पर हाथ रखकर ज़ोर से फुसफुसाया "ए! तुम्हारे इनक्युबेटर के बारे में मैं मारिया पेत्रोव्ना को बता रहा हूँ।"

मीश्का अपनी जगह पर ही बल खाते-खाते फुसफुसाया, "दगाबाज! चुगलखोर!!"

लेकिन तब तक कोस्त्या अपना हाथ ऊपर उठा चुका था।

"क्या कोस्त्या?" मारिया पेत्रोव्ना ने पूछा

मीश्का ने कोस्त्या की ओर तना हुआ घूँसा दिखाया।

"मारिया पेत्रोव्ना, इनक्युबेटर क्या होता है?" कोस्त्या ने सरल भाव से पूछा।

मारिया पेत्रोव्ना ने इनक्युबेटर की जानकारी देना शुरू किया। उन्होंने कहा कि बहुत-बहुत पहले लोगों ने अण्डों को एक खास तापमान तक गरमाकर बिना मुर्गियों के चूज़े निकालना सीख लिया था। दो हज़ार वर्ष पहले प्राचीन मिस्र तथा चीन में भी इनक्युबेटर थे। पुरातत्वविदों को प्राचीन मिस्र के लोगों द्वारा बनाए गए इनक्युबेटर मिले हैं। बेशक, वे बहुत बड़े थे और उनमें एक साथ कई हज़ार अण्डे सेये जा सकते थे।"

"मेरी जान-पहचान के दो लड़कों ने खुद ही इनक्युबेटर बनाया है," कोस्त्या बोला। "आपके ख्याल में क्या वे अण्डों से चूज़े निकाल सकेंगे?"

"घरेलू इनक्युबेटरों से भी हम चूज़े निकाल सकते हैं," मारिया पेत्रोव्ना ने उत्तर दिया। "लेकिन यह बड़ा कठिन काम है। कारखाने में बने इनक्युबेटर में ताप तथा नमी को ठीक रखने के तरह-तरह के साधन होते हैं, लेकिन घरेलू इनक्युबेटरों की बड़ी देखभाल करना पड़ती है। अगर तुम्हारे मित्रों में लगन और धीरज है तो वे ज़रूर सफल होंगे। लेकिन अगर वे हमारे मीश्का और कोल्या की तरह हैं, तो मुझे डर है कि कुछ भी हाथ नहीं आएगा।"

"क्यों?" मीश्का यकायक बोल उठा।

"क्योंकि तुम तो कक्षा में भी ठीक तरह नहीं रहते हो और पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते हो," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा और फिर पढ़ाने लगीं।

उस दिन हम स्कूल से बाहर आ रहे थे कि वीत्या स्मिर्नोव ने लपककर हमें पकड़ लिया और कहा कि प्रकृति-प्रेमी मण्डल में काम करने की आज हमारी पारी है।

"अरे नहीं, आज हम काम नहीं कर सकते," मीश्का ने बेचैन होकर कहा। "हमारे पास ज़रा भी समय नहीं है।"

"तुम्हारे पास तो कभी भी कुछ करने को समय नहीं होता। अगर तुम्हें कभी आना ही नहीं था, तो तुम मण्डल में शरीक ही क्यों हुए? आजकल बसन्त है। यही तो डटकर काम करने के दिन हैं। हमें पंछी-घर तैयार करना है।"

"हम पंछी-घर बाद में तैयार करेंगे।"

"लेकिन पंछी तो अब आना शुरू करने ही वाले हैं।"

"नहीं, वे नहीं आएँगे।"

"क्या मतलब? तुम्हारे ख्याल में पंछी तुम्हारा इन्तजार करेंगे?"

"हो सकता है कुछ देर इन्तजार ही करें।" मीश्का बोला।

हम हाँफते हुए घर आए। खैर यह थी कि सब कुछ ठीक था। बल्ब खराब नहीं हुआ था और ताप बिलकुल ठीक था। इनक्युबेटर के पास माया अपनी जगह पर बैठी थी। हमने उसको शाबाशी दी और उसे सैर करने भेज दिया।

आफत!

समय से तापमापी पर ध्यान रखना, हर तीन घण्टे के बाद अण्डों को पलटना और पानी के जल्दी से भाप बन जाने के कारण खाली हुई टंकी और लकड़ी की कटोरियों को फिर से भर देना....यही हमारा रोज़ का बँधा ढर्रा हो गया। यह कोई ऐसा काम तो नहीं था जिसे मेहनत भरा कहा जाए, लेकिन पूरे समय सावधान रहना पड़ता था। नहीं तो कुछ न कुछ जरूर हो जाता था। कभी पारा यकायक बढ़ जाता या कभी हम अण्डों को पलटना भूल जाते। पूरे समय हमें इनक्युबेटर का ही ध्यान रखना पड़ता था।

मीश्का का काम सबसे मुश्किल था क्योंकि उसे रात में निगरानी रखनी पड़ती थी। उसे पूरी रात की नींद कभी न मिल पाती। इसलिए दिन भर वह सर्दियों में मक्खी की तरह बेजान रहता। खाने के बाद वह अक्सर रसोई-घर के टेबिल पर झपकी ले लेता। और उस वक्त मैं अपनी चित्रकारी की कॉपी निकाल लेता और उसमें उसके चित्र बनाया करता।

पाँच दिन और पाँच रात यही होता रहा। छठे दिन स्कूल में घण्टे के ऐन बीच ही मीश्का को नींद ने घेर लिया। टीचर ने उसको झाड़ लगाई और पूरी क्लास ने उसकी खिल्ली उड़ाई।

मीश्का को बेशक इससे बहुत दुःख हुआ। हर किसी को दूसरों की हँसी उड़ाने में मज़ा आता है, लेकिन अपनी खिल्ली उड़ना किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

इससे भी बुरी बात यह रही कि उसी दिन लड़कों को दिखाने के लिए मैं अपने बनाए चित्र ले आया था। उन्होंने झट पहचान लिया कि ये चित्र विभिन्न मुद्राओं में सोए हुए मीश्का के हैं – लेटे हुए, बैठे हुए तथा आधे खड़े हुए।

"तुम तो यार पूरे कुम्भकर्ण हो," त्योशा कूरोच्किन ने मीश्का से कहा।

"इसने तो दुनिया-भर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है!" सेन्या बोब्रोव ने साथ दिया। "अफीमचियों की तरह ऊँघता रहता है, चौबीसों घण्टे!"

चित्र एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते रहे। हर कोई मजेदार बातें करता और ज़ोरों से हँसता।

"ये बेवकूफी भरे चित्र यहाँ लाने की तुम्हें क्या पड़ी थी?" मुझ पर झपटते हुए मीश्का ने पूछा।

"मुझे क्या पता था कि इन्हें ये इतने मजेदार लगेंगे?" मैंने कहा।

"तुमने जान-बूझकर ऐसा किया है, जिससे पूरी क्लास मेरी खिल्ली उड़ाए। अच्छे दोस्त रहे तुम। आगे से मैं तुम्हारे साथ कोई वास्ता नहीं रखूँगा।"

"मीश्का, कसम से, यह काम मैंने जान-बूझकर नहीं किया। ईमान से, नहीं। अगर मुझे पहले से मालूम होता कि ऐसा होगा तो मैं कभी तुम्हारा चित्र नहीं बनाता।" मैंने कहा।

लेकिन मीश्का ने दिन भर मुझसे बात नहीं की। शाम को उसने कहा, "अच्छा हो कि इनक्युबेटर को अपने घर ले जाओ और गैरे भद्दे चित्र बनाने की बजाय खुद रात में निगरानी का काम करो।"

"मुझे कोई इंकार नहीं," मैं बोला। "तुमने पाँच रात निगरानी की, अब मेरी बारी है।"

हम इनक्युबेटर को मेरे घर ले आए। और अब मुझ पर मुसीबत आना शुरू हो गई। हर रात मैं अपने पास अलार्म घड़ी रखता जो आधी रात को ठीक मेरे कानों में टनटना उठती। मैं जाग उठता और लड़खड़ाता हुआ रसोई-घर में जाता। वहाँ ताप देखता, अण्डों को पलटता और फिर लड़खड़ाता हुआ बिस्तर की ओर वापस आता। आम तौर पर तो मुझे नींद ही नहीं आती। लेकिन कहीं ज़रा-सी झपकी लगी कि उसी क्षण फिर अलार्म घड़ी टनटना उठती और उसे चूर-चूर करने का मन करता।

रोज सवेरे जागते समय मैं इतनी सुस्ती महसूस करता कि बस उठा न जाता। आधी नींद में ही कपड़े पहनने लगता और अपने को सिर पर से पायजामा खींचते हुए या कमीज़ की बाँहों में पैर घुसेड़ते हुए पाता। एक दिन तो मैंने अपने जूते ही उलटे पहन लिए। लड़कों ने देख लिया और मेरी इतनी खिल्ली उड़ाई कि क्लास में पाठ के बीच में ही मुझे जूते ठीक से पहनना पड़े।

लेकिन सबसे बड़ी आफत दसवीं रात को आई। कह नहीं सकता कि यह कैसे हुआ। मैं घड़ी में चाभी भरना भूल गया या अलार्म बजने पर भी मैंने नहीं सुना। कुछ भी हो, रात को मैं जो सोया तो एकदम सवेरे ही जागा। आँखें खोलकर मैंने देखा तो दिन काफी चढ़ चुका था। पहले मैं समझ नहीं सका कि क्या हुआ, लेकिन तभी मुझे याद आया कि मैं रात में एक बार भी नहीं उठा। बिछौने से कूदकर मैं इनक्युबेटर के पास लपका। तापमापी का पारा 37 डिग्री पर था। जितना होना चाहिए था उससे पूरे दो डिग्री कम। जल्दी-जल्दी मैंने दो कॉपियाँ लैम्प के नीचे ठूँसीं। लेकिन मन में मुझे पता था कि इससे कुछ होना-जाना नहीं है। अब तक अण्डे पूरी तरह से ठण्डे पड़ गए होंगे।

दस दिन के कठिन परिश्रम पर पानी फिर गया। अण्डों के अन्दर भ्रूण अब तक काफी बड़े हो गए होंगे, लेकिन हाय! मेरे निकम्मेपन ने सब बर्बाद कर दिया।

मुझे अपने पर इस कदर गुस्सा आया कि मैंने अपने सिर पर घूँसा जमाया। धीरे-धीरे पारा चढ़ने लगा और 39 डिग्री पर पहुँच गया। उसे देखते हुए दुखी मन से मैं सोचने लगा, "देख, पारा बिलकुल ठीक है। ऊपर से अण्डे बिलकुल पहले जैसे ही दिखाई देते हैं। लेकिन अन्दर, हा'! उनका सर्वनाश हो चुका है और अब चूजे निकलने की कोई आशा नहीं।"

फिर भी, कौन जाने, शायद कुछ भी नुकसान नहीं हुआ हो। शायद भ्रूणों को नष्ट होने का समय ही न मिला हो। इसका पता कैसे लगेगा? अकेला तरीका यही था कि अण्डों को गर्मी देते रहें और अगर इक्कीसवें दिन चूजे न निकलें तो समझ लें कि वे मर गए। हो सकता है कि वे अभी जीवित हों। लेकिन इसका पूरा पता और ग्यारह दिन बीतने पर ही चलेगा।

"हाय, हमारा प्यारा कुनबा यहीं खत्म हो गया," मैंने दुखी होकर सोचा। "बारह नन्हे चूजों की जगह एक भी न होगा।"

उसी क्षण मीश्का अन्दर आया। उसने तापमापी की ओर देखा और आनन्द से बोला, "वाह! एकदम सही ताप। सब कुछ ठीक चल रहा है। अब मेरी रात-पाली है।"

"नहीं," मैंने कहा। "अच्छा रहेगा कि मैं ही करता रहूँ। तुम बेकार क्यों तकलीफ उठाते हो?"

"बेकार क्यों?"

"मान लो कि चूजे न ही निकलें?"

"ठीक, मान लिया कि न निकलें, तब तो तुम्हें भी इतना काम करने की क्या जरूरत है? देखो हम दोस्त हैं सो हम दोनों को अपने-अपने हिस्से का काम करना चाहिए।"

मैं कुछ उत्तर न दे सका। अपना अपराध स्वीकार कर लेने का साहस मुझमें नहीं था। इसलिए मैंने चुप रहने का ही निश्चय किया। मैं जानता हूँ कि यह ठीक नहीं था, लेकिन इसके सिवा कोई चारा भी नहीं था।

पायोनियर सभा

कोस्त्या हमसे मिलने रोज़ आता था और फिर जाकर साथियों को बताता कि अण्डे किस तरह सेये जा रहे हैं। बेशक उसने यह नहीं बताया था कि मीश्का और मैं ही वे लड़के हैं जिन्होंने इनक्युबेटर बनाया है। उसने कुछ इस तरह गढ़ रखा था कि वे लड़के किसी दूसरे स्कूल में पढ़ते हैं।

"मैं उन लड़कों से मिलना चाहता हूँ," वीत्या स्मिर्नोव ने एक दिन कहा।

"भला किसलिए?"

"वे लोग दिलचस्प लगते हैं। काश, हमारे प्रकृति-प्रेमी मण्डल में भी ऐसे ही लड़के हों! हम भी सब कुछ बड़ी अच्छी तरह कर सकते थे. लेकिन मीश्का और कोल्या जैसे लड़कों के साथ कुछ भी नहीं किया जा

सकता। वे कुछ भी काम करना नहीं चाहते। उन्होंने पेड़-पौधे लगाने में कुछ सहायता नहीं दी और अब वे पंछी-घर भी नहीं बना रहे हैं....''

''उन लड़कों ने भी पेड़-पौधे नहीं लगाए,'' कोस्त्या ने मीश्का और मेरी ओर आँख मारते हुए कहा।

''हाँ, लेकिन उनकी बात दूसरी है। वे और काम में तो लगे हुए हैं।''

वीत्या को कभी ख्याल भी नहीं आया कि जिन लड़कों के बारे में कोस्त्या बता रहा है, वे हम ही हैं। और सचमुच ही हमें बहुत काम करना पड़ता था। इस इनक्युबेटर की वजह से हम पढ़ाई पर भी ध्यान नहीं दे पा रहे थे और नतीजे के तौर पर हम दोनों को अंकगणित में पाँच में से दो ही नम्बर मिले।

अलेक्सान्द्र येफ़ेमोविच ने मुझसे ब्लैक बोर्ड पर एक सवाल हल करने को कहा। मैं नहीं कर सका, इसलिए उन्होंने मुझे दो नम्बर दिए। इसके बाद उन्होंने मीश्का को बुलाया और उसे 2+ नम्बर दिए। हम थे भी इसी लायक। हमने ज़रा भी पढ़ाई नहीं की थी। लेकिन फिर भी इतने बुरे नम्बर पाना अफ़सोस की बात थी।

''तुम्हारी बात इतनी बुरी नहीं है,'' मीश्का बोला। ''तुम्हें सिर्फ 2 नम्बर मिले हैं, लेकिन मुझे तो 2+ मिले हैं।''

''अरे बुद्धू, 2+ दो से ज़्यादा होता है,'' मैंने कहा।

''बकवास! 2+ का अर्थ तीन थोड़े ही होता है, या होता है?''

''हाँ, है तो वह 2 के ही बराबर।''

''फिर '+' किसलिए है?''

''मुझे पता नहीं।''

''मैं बताता हूँ। दो नम्बर हमें ज़्यादा न खलें, इसलिए उसके आगे '+' लगा दिया जाता है। यह ऐसा ही है जैसे कह दिया जाए – लो तुम्हें एक सुन्दर-सा '+' दे दिया। लेकिन दो तो दो ही रहता है न? इसी से बुरा लगता है।''

''भला, क्यों?''

''कारण कि इससे हमारी मूर्खता सिद्ध होती है। देखो, अगर हम मूर्ख नहीं होते, तो केवल दो नम्बर यह दिखाने को काफी होते कि हम कुछ जानते ही नहीं हैं। लेकिन मूर्ख को 2+ दिए जाएँगे, जिससे वह यह न सोच ले कि उसके साथ ठीक बर्ताव नहीं किया गया। लेकिन मैं मूर्ख कहलाना नहीं चाहता हूँ। कभी 2– नम्बर भी मिल सकते हैं,'' वह कहता गया। ''इसमें मुझे कोई तुक नहीं दिखाई देता। दो नम्बर मिलने का अर्थ ही यह है कि हम कुछ नहीं जानते। लेकिन कुछ नहीं से भी कम क्या जानोगे?''

''बिलकुल ठीक है,'' मैंने कहा।

''यही तो मुझे कहना है!'' मीश्का बोला। ''2– का मतलब है तुम कुछ नहीं जानते और न ही जानना चाहते हो। अगर तुमने कुछ पढ़ाई ही नहीं की, तो तुम्हें दो ही नम्बर मिलेंगे। लेकिन अगर तुम आलसी हो,

बदनाम हो, तो तुम्हें '2–' ही दिए जाएँगे, जिससे तुम्हें कुछ महसूस हो। मिलने को तो एक नम्बर भी मिल सकता है," वह उसी रौ में कहता गया।

लेकिन वह और कुछ कह नहीं पाया, क्योंकि तभी अलेक्सान्द्र येफ्रेमोविच ने हमें अलग बिठा दिया। आखिरी छुट्टी के समय जेन्या स्कवोर्त्सोव ने कहा, "पढ़ाई खत्म होने के बाद रुक जाना। हमारी सभा होगी।"

"ओह, लेकिन हम बिलकुल नहीं रुक सकते, हमें फुर्सत नहीं है," मीश्का ने और मैंने बताया।

"तुम्हें रुकना होगा," जेन्या बोला, "क्योंकि तुम दोनों के बारे में ही तो हमें चर्चा करनी है।"

"क्यों, हमने क्या किया?"

"सभा में तुम्हें सब कुछ पता चल जाएगा।" जेन्या ने बस इतना ही कहा।

"क्या खूब!" मीश्का बोला। "हमें बुरे नम्बर क्या मिले कि ये सभा करने जा रहे हैं। वह सोचता है कि टोली का नायक होने के कारण वह हर किसी के बारे में सभा कर सकता है। जरा ठहरो, जब खुद उसे ही 2 नम्बर मिलेंगे, तब देखेंगे कि यह जनाब सभा करते हैं या नहीं!"

"उसको 2 नम्बर कभी नहीं मिलेंगे, वह लगकर पढ़ाई करता है," मैंने कहा।

"तुम क्यों उसकी तरफदारी कर रहे हो?"

"मैं किसी की तरफदारी नहीं करता।"

"जाने दो यार, लेकिन अब हमें सभा में तो जाना पड़ेगा," मीश्का बुदबुदाया।

"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "माया इनक्युबेटर की निगरानी कर रही है।" और हम सभा के लिए ठहर गए।

"आज हम नम्बरों और आचरण के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं," जेन्या स्कवोर्त्सोव ने कहना शुरू किया। "आजकल कुछ लड़के क्लास में बुरा आचरण कर रहे हैं। वे एक-दूसरे के साथ कुलबुलाहट करते हैं, गप्पे लगाते हैं और दूसरों के काम में दखल देते हैं। मीश्का और कोल्या ही सबसे बड़े अपराधी हैं। गप्पे लगाने के कारण इन दोनों को कई बार अलग बिठाना पड़ा है। यह नहीं चलेगा। यह बहुत ही बुरा है। और आज इस सबके ऊपर इन दोनों को सिर्फ 2 नम्बर मिले।"

"हम दोनों को एक ही से नम्बर नहीं मिले। मुझे 2+ मिले हैं," मीश्का बोला।

"इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता," जेन्या ने कहा। "तुम दोनों को दूसरे विषयों में भी ज्यादा बुरे नम्बर मिल रहे हैं।"

"दूसरे किसी भी विषय में हमें 2 नम्बर नहीं मिले और मुझे सिर्फ रूसी में 3 नम्बर मिले हैं," मीश्का बोला।

"नहीं, इसको '3–' नम्बर मिले हैं," वान्या लोज्किन बोल उठा।

"तुम बीच में टाँग मत अड़ाओ," मीश्का ने कहा।

"क्यों नहीं, यह पायोनियरों की सभा है। जो चाहूँ सो कहने का मुझे अधिकार है।"

"तुम्हें पहले इजाजत लेनी चाहिए।"

"ठीक है, मैं इजाज़त माँगता हूँ। दोस्तो, सच कहूँ, तो ये दोनों जने आजकल किसी कारण होमवर्क बिलकुल नहीं करते और इसलिए इनको कम नम्बर मिल रहे हैं। इनसे पूछा जाए कि यह कारण क्या है।"

"बिलकुल ठीक, बताओ क्या बात है? यह जानने का हमें अधिकार है," जेन्या ने कहा।

"कोई कारण नहीं है," मीश्का ने उत्तर दिया।

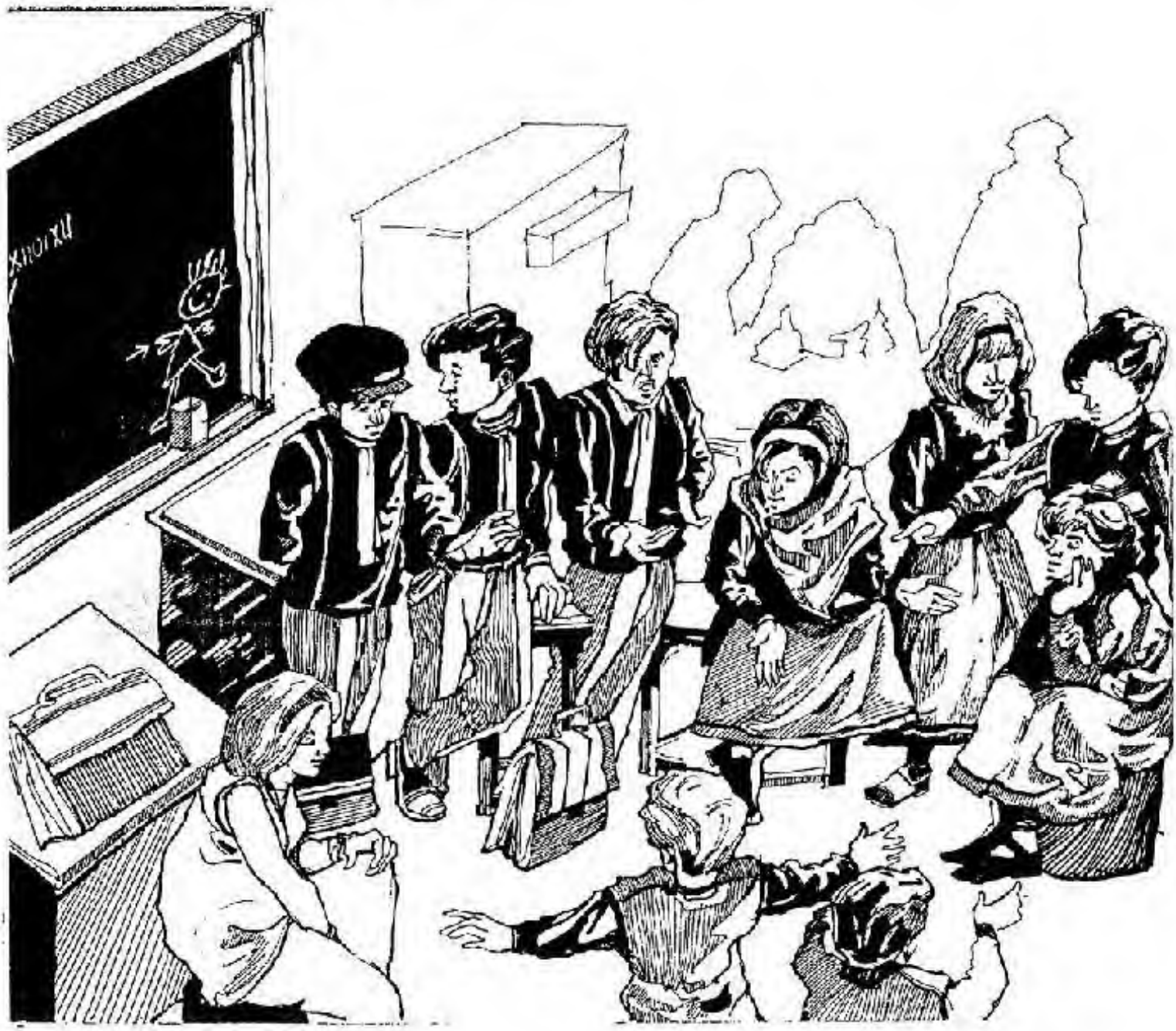

"मैं जानता हूँ कि क्या बात है," त्योशा कूरोव्किन बोला। "क्लास में सारा समय ये बोलते रहते हैं और अध्यापक की ओर ध्यान नहीं देते; इतना ही नहीं, घर पर भी ये पढ़ाई नहीं करते। मेरी राय में इनकी बड़बड़ बन्द करने के लिए इन्हें सदा के लिए अलग कर देना चाहिए।"

"तुम हमें अलग नहीं कर सकते," नीश्का बोला। "हम दोनों मित्र हैं। तुम किसी भी तरह मित्रों को अलग नहीं कर सकते, या कर सकते हो?"

"अगर मित्र होने से सिर्फ नुकसान ही पहुँचता हो, तो ऐसा करना ही सबसे अच्छा है," सेन्या बोब्रोव ने कहा।

इसी समय कोस्त्या हमारे बचाव के लिए खड़ा हुआ। "आज तक कभी किसी ने सुना है कि दोस्ती से भी किसी का नुकसान हो जाता है?" उसने पूछा।

"इनकी दोस्ती से होता है, क्योंकि ये हर चीज में एक-दूसरे की नकल करते हैं। अगर एक बोलने लगा, तो दूसरा भी बोलेगा। एक अपनी पढ़ाई नहीं करना चाहता, तो दूसरा भी नहीं करेगा। अगर एक को 2 नम्बर मिले, तो दूसरे को भी उतने ही मिलेंगे। जी नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। इन दोनों को अलग करना ही होगा, यह बात है!" वीत्या स्मिर्नोव ने कहा।

"एक मिनट," कोस्त्या बोला। "हम उनको जब चाहें अलग कर सकते हैं। लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि क्या इनकी मदद की जा सकती है। मान लो कि उनके पास पढ़ाई के लिए समय ही नहीं बचता है, तो?"

"क्या कहते हो, पढ़ाई के लिए समय नहीं बचता?"

"हाँ, मान लो कि ये किसी बहुत बड़े काम में लगे हुए हैं।"

इस पर सेन्या बोब्रोव हँस पड़ा। "बड़े काम में? यह क्या हो सकता है?"

"मान लो कि ये एक इनक्युबेटर बना रहे हैं।"

"इनक्युबेटर?" सेन्या फिर जोर से हँस पड़ा।

"हाँ, इनक्युबेटर। जरा सोचो, क्या यह कोई आसान काम है? क्या तुम्हें मालूम है कि ताप का ध्यान रखने के लिए ये रात-रात भर जागते रहते हैं? शायद उधर ये दिन-रात परिश्रम करते हैं और इधर हम उनको झिड़कियाँ सुनाते हैं। हो सकता है कि....."

"मैं भी जानूँ कि यह भेद की बात है क्या," गुस्से में आते हुए जेन्या ने कहा। "क्या इन्होंने सचमुच ही इनक्युबेटर बनाया है?"

"हाँ," कोस्त्या ने कहा।

"तुमने जिन लड़कों का जिक्र किया था, इन्होंने उनकी नकल की है।" वीत्या बोला।

"नहीं," कोस्त्या ने कहा। "इन्होंने किसी की भी नकल नहीं की है। ये वही लड़के हैं जिनके बारे में मैंने बताया था।"

"क्या?"

"हाँ, यही बात है।"

"लेकिन, लेकिन तुमने तो कहा था कि वे किसी दूसरे स्कूल के लड़के हैं।"

"मैंने ऐसे ही मजाक में कहा था।"

सब लड़कों ने मीश्का को और मुझे घेर लिया।

"तो तुमने खुद ही इनक्युबेटर बनाया है?"

वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "यह बड़ी शर्म की बात है! सच्चे प्रकृति-प्रेमी कभी ऐसा नहीं करते। इनक्युबेटर के बारे में तुमने चुप्पी क्यों साध ली! क्या तुमने सोचा नहीं कि ऐसी बात में हमें भी दिलचस्पी होगी? क्यों तुमने यह बात छिपाकर रखी?"

"हमने सोचा कि तुम हमारी खिल्ली उड़ाओगे," हमने कहा।

"भला खिल्ली क्यों उड़ाते? इसमें मजाक की बात क्या है? उलटे हमने तुम्हारी मदद ही की होती। हम बारी-बारी से ताप पर ध्यान रख लेते। तुम्हें आराम मिल जाता और अपने सबक तैयार करने के लिए समय भी मिल जाता।"

"मित्रो," वादिक जैत्सेव ने कहा। "इस इनक्युबेटर के काम में हमें भी हाथ बँटाना चाहिए।"

"बिलकुल ठीक!" सब लड़के चिल्लाए।

वीत्या ने बताया कि खाने के बाद वह हमारे यहाँ आएगा और फिर हम हर किसी को बारी देने का टाइम-टेबल बना लेंगे।

इसके बाद सभा समाप्त हुई।

मददगारों ने मदद की

खाने के बाद लगभग सारा ही प्रकृति-प्रेमी मण्डल मीश्का के रसोई-घर में एकत्र हो गया। सबको इनक्युबेटर दिखाया गया और उसके बारे में जानकारी दी गई। गर्मी देने का साधन कैसे काम करता है, ताप की देखरेख हम कैसे करते हैं, और नियत समय पर अण्डों को कैसे पलटते हैं। इसके बाद हम टाइम-टेबल बनाने के लिए बैठे। इसके पहले वीत्या स्मिर्नोव के सुझाव पर हमने ड्यूटी देने वाले लड़कों के लिए एक नियमावली तैयार की।

हर दिन स्कूल खत्म होने के बाद दो लड़के हमारे पास आ जाते। मीश्का तथा मैं उनको बता देते कि क्या-क्या करना है और फिर शेष दिन के लिए इनक्युबेटर उनके सुपुर्द कर देते। बारी-बारी से वे थोड़ा समय निकालकर खाने के लिए घर जाते तथा अपना सबक तैयार करते। यह देखना भी उनके काम का ही हिस्सा था कि मीश्का और मैं पढ़ाई करने की बजाय कहीं इनक्युबेटर के इर्द-गिर्द तो नहीं मण्डराते रहते हैं।

इसके बाद वीत्या ने टाइम-टेबल बना दिया जिससे हर किसी को पता रहे कि किस दिन उसको ड्यूटी होगी। हमने इसे दीवार पर टाँग दिया।

"इसमें हमारे नाम क्यों नहीं है?" मीश्का ने पूछा। "क्या हमें बिलकुल हटा दिया गया है?"

"रात का काम कौन करेगा?" वीत्या ने उत्तर दिया। "तुम लोग बारी-बारी से रात का काम करोगे।"

इसके बाद जेन्या ने सब लड़कों को भेज दिया। "आज जो लड़के ड्यूटी पर हैं, उनको छोड़कर और सब चले जाएँ," उसने कहा। "यूँ ही भीड़ लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

जेन्या, वीत्या, मीश्का और मेरे अलावा बाकी सब लड़के चले गए। "तुम दोनों भी जाओ," जेन्या ने हमसे कहा।

"हम कहाँ जाएँ?"

"जाकर अपना सबक तैयार करो।"

"लेकिन यहाँ कुछ गड़बड़ हो गई, तो?"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। और कुछ हुआ तो मैं तुम्हें बुला लूँगा।"

"तब ठीक है। लेकिन देखो, कहीं भूल न जाना।"

इस तरह मीश्का को और मुझे पढ़ाई करने के लिए बैठना पड़ा। हमने रूसी भाषा और भूगोल का अपना काम किया और गणित का एक सवाल भी हल कर लिया। वैसे सवाल तो दो दिए गए थे, लेकिन दूसरा बड़ा कठिन था, इसलिए हमने उसको वैसा ही छोड़ दिया और रसोई-घर की खबर लेने गए।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" जेन्या ने हमारे अन्दर आते ही पूछा। "तुमसे सबक तैयार करने के लिए कहा गया था, न?"

"हाँ, हाँ, हमने कर भी लिया।"

"कर लिया? ज़रा अपनी कॉपियाँ तो दिखाओ।"

"ऐं, यह क्या है," मीश्का बोला। "पूरी जाँच?"

"क्यों नहीं! हमने तुम्हारी देखभाल का जिम्मा लिया है, इसलिए तुम्हारे लिए हम जवाबदेह हैं, समझे?" हम अपनी कॉपियाँ ले आए।

"तुमने तो एक ही सवाल हल किया है और दिए दो गए थे?"

"हम बाद में उसे भी हल कर लेंगे।"

"बिलकुल नहीं, तुम्हें अभी हल करना होगा। अगर तुमने उसे टालना शुरू किया, तो उसके बारे में भूल जाओगे और फिर कल स्कूल बिना कुछ किए पहुँचोगे।"

"हमने एक सवाल तो कर लिया है, न?"

"एक करने से नहीं चलेगा," जेन्या ने दृढ़ता से कहा। "तुम्हें कहावत मालूम है न - 'पहले काम, फिर आराम'।"

इसलिए हमें वापस जाकर उसी सवाल से माथापच्ची करनी पड़ी। हमने बड़ी कोशिश की लेकिन सवाल हल न हो सका। हमने उस पर पूरा एक घण्टा लगाया और इसके बाद हम रसोई-घर में चले गए।

"वह हल नहीं हो रहा," मीश्का बोला। "हर बात हमने ठीक तरह से की है, लेकिन हमारा उत्तर पुस्तक के उत्तर से मेल नहीं खाता है। छपाई की भूल होगी, और क्या?"

"बहुत अच्छे! किताब को ही दोष दो!" जेन्या बोला।

"हाँ, इसके पहले भी कई बार पुस्तक का उत्तर गलत निकला है।"

"बकवास!" जेन्या ने कहा। "चलो, मैं देखता हूँ।"

वह हमारे साथ कमरे में आया और जो कुछ हमने किया था, देखने लगा। सवाल पर उसने भी बहुत सिर खपाया। हर चीज़ बिलकुल ठीक जान पड़ती थी लेकिन उत्तर सही नहीं आता था।

"मैंने क्या कहा था!" मीश्का ने खुश होकर कहा।

लेकिन जेन्या ने कहा कि कहीं कोई गलती ज़रूर होगी और वह उसको पकड़कर ही रहेगा। उसने फिर शुरू से सवाल की जाँच की और आखिर गलती ढूँढ ही निकाली। "यह रही," वह बोला। "सात सत्ते?"

"उनचास, और क्या?"

"बिलकुल ठीक, लेकिन देखा तुमने क्या लिखा है? इक्कीस!"

उसने गलती सुधारी और फिर उत्तर ठीक निकल आया। "गलती सिर्फ इसलिए हुई कि तुम लापरवाह हो," उसने कहा और इनक्युबेटर की ओर लौट गया।

हमने अपनी कॉपियों में सवाल उतारा और फिर रसोई-घर में लौट आए।

"सब पूरा हो गया।" हमने कहा।

"शाबाश! जाओ, अब थोड़ा घूम आओ। बाहर की ताज़ा हवा लेना तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।"

ना-नुकर करने का कोई फायदा नहीं था, इसलिए मीश्का और मैं चले गए।

दिन बहुत अच्छा था। बाहर लड़के वॉली बॉल खेल रहे थे। हम उसमें शामिल हो गए। उसके बाद हम कोस्त्या देव्यात्किन के यहाँ गए। तभी वादिक जैत्सेव भी वहाँ आ गया। और शाम तक हम चारों लूडो और तरह-तरह के खेल खेलते रहे। जब हम घर पहुँचे तो काफी देर हो गई थी। हम सीधे रसोई-घर में गए। वहाँ ज़ेन्या और वीत्या के अलावा वान्या लोज़्किन को भी देखा। उसने कहा कि इनक्युबेटर पर रात को निगरानी रखने के लिए वह अपनी माँ से पूछ आया है।

"अरे, यह क्या बात है!" मीश्का बोला। "ऐसा होता रहा तो मुझे और कोल्या को कुछ भी करने का मौका नहीं मिलेगा। आज वान्या रात को काम करेगा, तो कल दूसरा कोई। ऊँ हूँ, यह मुझे मंजूर नहीं।"

"ठीक है," वीत्या बोला। "मैं तुम दोनों के नाम भी टाइम-टेबल में रख देता हूँ, जिससे तुम्हें भी औरों की तरह बारी मिले।" उसने हमारे नाम सूची में सबसे आखिर में डाल दिए।

मीश्का और मैं हिसाब लगाने लगे कि हम दोनों की बारी कब आएगी और इससे पता चला कि हमारे हिस्से में आएगा सबसे अच्छा दिन, इक्कीसवाँ दिन। वह दिन जब चूज़ों को अण्डों से निकलना चाहिए!

आखिरी तैयारियाँ

आखिर अब मीश्का और मैं कुछ आराम कर सकते थे। सच कहें तो इससे हमें दुख नहीं हुआ, क्योंकि इनक्युबेटर हमारे लिए बोझ-सा हो गया था। हम दिन-रात उसके साथ बँधे रहते थे और कहीं कुछ भूल न हो जाए, इसके डर से सारा समय उसी के सोच-विचार में रहते थे। अब बिना हमारे सब काम सुचारु ढंग से चल रहा था।

हम प्रकृति-प्रेमी मण्डल में भी अपने हिस्से का काम करने लगे। हमने दो पंछी-घर बनाए और उन्हें अपने बगीचे में टाँग दिया। स्कूल में फूल के पौधे भी लगाए। लेकिन सबसे बड़ी बात यह हुई कि अब हमें सबक तैयार करने को काफी समय मिलने लगा। जब मेरी तथा मीश्का की माँ ने देखा कि हमें फिर से अच्छे नम्बर मिलने लगे हैं, तो उन्हें इस बात से खुशी हुई कि लड़के इनक्युबेटर के काम में हमारी सहायता कर रहे हैं।

जब प्रकृति-प्रेमी मण्डल की बैठक हुई, तो मारिया पेत्रोव्ना ने हमें बताया कि चूज़ों के पैदा होने से पहले क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए। उन्होंने हमसे कुछ घास लगाने को कहा, ताकि उन्हें खाने के लिए कुछ ताज़ी हरी चीज़ मिल सके। उन्होंने कहा कि जई बोना सबसे अच्छा है, क्योंकि वह बहुत पौष्टिक होती है और जल्दी-जल्दी बढ़ती है।

अब बोने के लिए जई कहाँ से लाएँ?

"हमें चिड़िया-बाज़ार चलना चाहिए", वान्या लोज़्किन ने कहा। "वहाँ चिड़ियों के लिए सभी तरह का खाना मिलता है।"

स्कूल के बाद वान्या और जेन्या चिड़िया-बाज़ार गए। दो घण्टे बाद वे जई से भरी हुई जेबों तथा सुनाने के लिए एक लम्बी कहानी के साथ लौटे।

"चिड़िया-बाज़ार में कहीं भी जई नहीं थी। हम सारी जगह घूमे-फिरे। जई के अलावा बाकी सभी चीजें वहाँ थीं : पटुआ, बाजरा आदि-आदि। हमने सोचा कि हमें खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा, लेकिन वहाँ से जाने से पहले हमने खरगोशों पर भी एक नज़र डालने का फैसला किया। वहाँ हमें तोबड़े से जई खाता हुआ एक घोड़ा नज़र आया। सो हमने कुछ जई माँग ली।"

"किससे, घोड़े से?" चकित होकर मीश्का ने पूछा।

"वाह रे पगले! घोड़े से क्यों, हमने उसके मालिक से माँगी। वह एक किसान था जो बाजार में खरगोश लाया था। बहुत अच्छा आदमी था वह। उसने पूछा कि हमें जई किसलिए चाहिए और जब हमने बताया कि चूज़ों के लिए चाहिए तो उसने कहा, "अरे नहीं, चूज़ों को जई कौन खिलाता है!" लेकिन हमने उसे बताया कि हम जई बोकर अंकुर निकालना चाहते हैं, तो उसने कहा कि हम चाहे जितनी जई ले सकते हैं। बस, हमने अपनी जेबें भर लीं।

वान्या और जेन्या ने अपनी जेबों से जई निकाली। हम तुरन्त काम में लग गए। हमने दो उथली पेटियाँ बनाईं, उनको मिट्टी से भरा, ऊपर से पानी डाला और मिलाकर पतला-सा कीचड़ तैयार किया। इसके बाद हमने मिट्टी में जई डाल दी और फिर एक बार अच्छी तरह मिलाकर पेटियों को अँगीठी के नीचे रख दिया, ताकि बीज को गर्मी मिलती रहे।

मारिया पेत्रोव्ना ने हमें बताया था कि पंछियों के अण्डों की तरह पौधों के बीज भी जानदार होते हैं। बीज के भीतर ज़िन्दगी सोई रहती है। गरम गीली मिट्टी में जाते ही यह जीवन जाग जाता है और बीज बढ़ने लगते हैं। सभी जानदार चीज़ों की तरह बीज भी मर सकते हैं और मरे हुए बीज नहीं उगते।

हमें इस बात का बड़ा डर था कि कहीं हमारे बीज "मरे हुए" ही न हों। इसलिए हम बार-बार पेटियों में झाँकते रहते थे कि वे उग रहे हैं या नहीं। दो दिन बीत गए, फिर भी कुछ नहीं हुआ। तीसरे दिन हमने देखा कि पेटियों की मिट्टी यहाँ-वहाँ तड़क गई है और कहीं-कहीं वह उभर भी आई है।

"यह क्या है?" मीश्का ने आश्चर्य से पूछा। "पेटियों को ज़रूर किसी ने हाथ लगाया है!"

"ऐसी कोई बात नहीं है," ल्योशा कूरोच्किन ने उत्तर दिया। वह उस दिन सेन्या बोब्रोव के साथ ड्यूटी पर था।

"फिर यह मिट्टी इस तरह टूट-फूट क्यों गई है?" मीश्का चिल्लाया। "बीजों को देखने के लिए तुम्हीं ने अपनी उँगलियों से उसे कुरेदा होगा।"

"नहीं, हमने ऐसा कुछ नहीं किया!" सेन्या ने जवाब दिया।

मैंने मिट्टी का एक ढेला उठाया और उसके नीचे बीज को टटोलने लगा। वह फूलकर खुल गया था और उसके सिरे पर एक नन्हा-सा सफेद अंकुर था। मीश्का ने भी एक बीज उठा लिया और देर तक उसको देखता रहा।

"अब मैं समझा क्या बात है!" वह चिल्लाया। "इन्होंने मिट्टी को खुद ही कुरेदा है।"

"किन्होंने?"

"बीजों ने, और किसने! वे जाग गए हैं और अब मिट्टी में से अपना रास्ता निकाल रहे हैं। देखो, मिट्टी किस तरह फूल गई है। मिट्टी में उनके लिए और जगह नहीं बच रही है।"

बीज कैसे उग रहे हैं, यह दिखाने के लिए मीश्का लड़कों को बुलाने दौड़ा। ल्योशा, सेन्या और मैंने मिट्टी में से कुछ और बीज निकाल लिए। इन सब में से अंकुर निकलने लगे थे। जल्दी ही लड़कों ने चारों तरफ भीड़ लगा दी। हर कोई बीज देखना चाहता था।

"देखो," वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "बीज फूट रहे हैं और जिस तरह अण्डों में से बच्चे निकलते हैं, उसी तरह से जई निकल रही है।"

"बिलकुल ठीक," मीश्का बोला। "जई भी जानदार चीज ही है। फर्क इतना है कि वह उगती है और एक ही जगह पर रहती है, लेकिन जब अण्डों में से हमारे चूज़े निकलेंगे तो वे इधर-उधर दौड़ेंगे, किकियाते रहेंगे और कुछ खाने को चाहेंगे। वाह, कितना खुश होगा हमारा प्यारा परिवार!"

सबसे कठिन दिन

मिल-जुलकर काम करने में मजा भी आया और समय भी जल्दी कट गया। आखिर इक्कीसवाँ दिन आ गया। उस दिन शुक्रवार था। चूजों के लिए सभी तैयारियाँ हो चुकी थीं। हमने कबाड़खाने में से एक बड़ा बर्तन ढूँढ निकाला और उसके अन्दर नमदे का अस्तर बिछा दिया, ताकि उसमें नवजात चूज़ों को गरम रखा जा सके। अब यह गरम पानी के बर्तन पर रखा हुआ था और पहले चूज़े के निकलने के इन्तज़ार में था।

मीश्का और मैं पिछली रात को भी इनक्युबेटर के पास रहना चाहते थे, लेकिन वादिक जैत्सेव ने अपनी माँ से रात की ड्यूटी देने की आज्ञा ले ली थी और वह हमें अपने पास तक आने देने के लिए तैयार नहीं था। "मेरे ड्यूटी पर होते हुए तुम्हें यहाँ मण्डराने की जरूरत नहीं है," वह बोला। "तुम जाकर सो सकते हो।"

"लेकिन चूज़ों ने रात में ही अण्डों में से निकलना शुरू कर दिया, तो?" हमने पूछा।

"उसमें चिन्ता की क्या बात है? चूज़े के निकलते ही मैं उन्हें बर्तन में छोड़ दूँगा और सूखने दूँगा।"

"खबरदार, ऐसे ही मत टपका देना," मैंने घबराकर कहा। "चूज़ों को नरमी से हाथ लगाना चाहिए।"

"अरे घबराओ मत, मैं ऐसा ही करूँगा। अब जाओ और सो जाओ। भूलो मत कि कल तुम्हारी ड्यूटी है। इसलिए रात को अच्छी तरह आराम करना ठीक रहेगा।"

"ठीक है," मीश्का मान गया। "लेकिन, भाई इतना करो कि चूज़ों का निकलना शुरू होते ही हमें जगा देना। देखो न, कितने लम्बे समय से हम इसी का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

वादिक ने हामी भरी। हम सोने चले गए। लेकिन चूज़ों की चिन्ता में मुझे बहुत देर तक नींद नहीं आई। दूसरे दिन सवेरे मैं बहुत जल्दी जाग उठा और तुरन्त मीश्का के घर दौड़ता गया। वह भी जाग चुका था

और इनक्युबेटर के पास बैठकर अण्डों को देख रहा था।

"अब तक तो मुझे कोई आसार नजर नहीं आता।"

"शायद अभी समय नहीं हुआ," वादिक बोला।

वादिक जल्दी ही अपने घर चला गया, क्योंकि रात बीत गई थी और हमारी ड्यूटी शुरू हो गई थी। उसके जाते ही मीश्का ने एक बार फिर सभी अण्डों को देखने का फैसला किया। हमने उनको पलटकर देखना शुरू किया कि कहीं अन्दर से किसी चूज़े ने अपनी चोंच से कोई छोटा-सा छेद बनाया है या नहीं। लेकिन किसी भी खोल पर कोई भी छेद नहीं था। हमने इनक्युबेटर को बन्द कर दिया और बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

"मान लो कि हम कोई अण्डा तोड़कर देख ही लें कि भीतर चूज़ा है या नहीं?" मैंने सुझाव रखा।

"नहीं, अभी ऐसा नहीं करना चाहिए," मीश्का ने कहा। "चूज़ा अभी भी अपनी खोल में से ही साँस लेता है, अपने फेफड़ों से नहीं। जैसे ही वह फेफड़ों से साँस लेना शुरू कर देगा, वह अपनी खोल खुद तोड़ डालेगा। अगर हमने खोल को जल्दी तोड़ दिया, तो चूज़ा मर जाएगा।"

"लेकिन अन्दर वे ज़रूर जीवित हैं," मैंने कहा। "अगर तुम ध्यान से सुनो, तो शायद भीतर उनको हिलते-डुलते भी सुन लो।"

मीश्का ने इनक्युबेटर से एक अण्डा उठाया और उसको अपने कान से लगा लिया। मीश्का के ऊपर झुककर मैंने भी अपना कान उसके पास लगा दिया।

"खामोश!" मीश्का गुर्राया। "मेरे कान के पास तुम इसी तरह घुर्राटे लेते रहे तो मैं कैसे सुन सकूँगा!"

मैंने अपनी साँस रोक ली। अब एकदम खामोशी थी, इतनी खामोशी कि हम मेज़ पर रखी घड़ी की टिक-टिक भी सुन सकते थे। यकायक दरवाज़े की घण्टी बज उठी। मीश्का उछल पड़ा और अण्डा उसके हाथ से लगभग गिर ही पड़ा। मैंने दौड़कर दरवाज़ा खोला। वीत्या आया था। वह जानना चाहता था कि चूज़ों ने निकलना शुरू किया या नहीं।

"नहीं," मीश्का बोला। "अभी देर है।"

"ठीक है, स्कूल जाने से पहले मैं फिर देख जाऊँगा," वीत्या बोला।

वह चला गया और मीश्का ने फिर अण्डे को बाहर निकालकर कान से लगा लिया। वह काफी देर तक उसी तरह अपनी आँखें बन्द किए ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

"मुझे किसी भी तरह की कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती," वह आखिर में बोला।

मैंने भी अण्डे को लेकर सुना। मुझे भी बिलकुल ही आवाज नहीं सुनाई दी।

"भ्रूण नष्ट तो नहीं हो गया?" मैंने कहा। "हमें औरों को भी देखना चाहिए।"

हमने एक-एक करके सभी अण्डों को बाहर निकाला और सबको ध्यान से सुना, लेकिन उनमें से किसी ने भी जीवन का कोई भी लक्षण प्रकट नहीं किया।

"सब-के-सब ही तो नष्ट नहीं हो सकते न, या हो सकते हैं?" मीश्का बोला। "उनमें से कम से कम एक तो ज़िन्दा होना चाहिए।"

घण्टी फिर बज उठी। इस बार सेन्या बोब्रोव आया था। "तुम इतनी सुबह क्या कर रहे हो?" मैंने पूछा।

"मैं पूछने आया था कि चूज़े ठीक से निकल रहे हैं?"

"वे निकल ही नहीं रहे हैं," मीश्का ने उत्तर दिया। "अभी समय नहीं हुआ।" उसके बाद सेर्योजा आया।

"क्यों, कोई चूज़ा निकला कि नहीं?"

"तुम बड़े उतावले हो," मीश्का ने कहा। "तुम क्या यह समझते हो कि पौ फटते ही चूज़े निकलना शुरू कर देंगे? अभी बहुत देर है।"

सेर्योजा और सेन्या कुछ देर बैठे और फिर चले गए। मीश्का ने और मैंने फिर से अण्डों की आवाज़ सुनना शुरू किया। "नहीं, कोई फायदा नहीं," वह दुख से बोला। "मुझे कुछ भी नहीं सुनाई देता।"

"कहीं हमें बुद्धू बनाने के लिए तो वे चुप नहीं हैं?" मैंने राय दी।

"अब तक तो उनको खोल को तोड़ना शुरू कर ही देना चाहिए था।"

फिर यूना फिलीप्पोव और स्तासिक लेव्शिन आए और उनके बाद वान्या लोज्किन आया। एक के बाद एक वे आते रहे और स्कूल जाने के समय तक तो ऐसा लगने लगा मानो एक आम सभा ही हो रही हो। हमने माया को बुलाया और बताया कि हमारे स्कूल में रहते समय अगर चूज़े निकलना शुरू कर दें, तो क्या करना चाहिए। इसके बाद हम सबके साथ स्कूल चले गए।

मैं नहीं जानता कि वह दिन हमने कैसे काटा। यह हमारी ज़िन्दगी का सबसे कठिन दिन था। ऐसा लग रहा था मानो कोई जान-बूझकर समय को लम्बा कर रहा था और हर घण्टे को रोज़ के मुकाबले दस गुना लम्बा कर रहा था।

हम सबको इस बात का बहुत डर था कि चूज़े हमारे स्कूल में रहते समय ही निकलना शुरू कर देंगे और अकेली माया कुछ न कर सकेगी। आखिरी घण्टा तो सबसे बुरा था। लगता था मानो कभी खत्म ही नहीं होगा। इतनी देर हो गई थी कि हमें हैरानी होने लगी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमें घण्टे की आवाज़ ही न सुनाई पड़ी हो। फिर हमने सोचा कि शायद घण्टा खराब हो

गया हो, या स्कूल की दरबान दून्या चाची आखिर का घण्टा बजाना भूलकर घर चली गई हो। और हमें अब कल सुबह तक स्कूल में ही बैठे रहना पड़ेगा।

सारी की सारी क्लास बेचैन और बेबस हो रही थी। हर कोई जेन्या स्कवोर्त्सोव के पास कागज की चिटें भेज-भेजकर पूछ रहा था कि कितने बज गए। लेकिन किस्मत की बात, उस दिन जेन्या अपनी घड़ी घर पर ही छोड़ आया था।

क्लास में इतना शोर था कि अलेक्सान्द्र येफ्रेमोविच को कई बार रुककर खामोश रहने के लिए कहना पड़ा। लेकिन शोर होता रहा। आखिर मीश्का ने यह कहने के लिए हाथ उठाया कि घण्टा खत्म हो चुका होगा, लेकिन तभी घण्टी बज गई और हर कोई उछलकर दरवाजे की ओर झपटा। अलेक्सांद्र येफ्रेमोविच ने हमें फिर से बैठा दिया और कहा कि किसी को भी शिक्षक से पहले बाहर नहीं जाना चाहिए। फिर वह मीश्का की ओर मुड़े, "तुम मुझसे कुछ पूछना चाहते थे?"

"जी नहीं, मैं सिर्फ यह कहना चाहता था कि घण्टा खत्म हो गया है।"

"लेकिन तुमने तो घण्टी बजने से पहले ही हाथ उठाया था, न?"

"मैंने सोचा कि शायद घण्टी खराब हो गई है।"

अलेक्सान्द्र येफ्रेमोविच ने अपना सिर हिलाया, रजिस्टर उठाया और क्लास के बाहर चले गए। लड़के बरामदे की ओर तथा सीढ़ियों पर से नीचे की तरफ झपटे। फाटक के पास काफी भीड़ थी, लेकिन मैंने और मीश्का ने उसमें से रास्ता निकाल लिया। हम लड़कों के आगे-आगे सड़क पर सीधे दौड़ते चले गए। लड़कों की पूरी की पूरी कतारें हमारे पीछे-पीछे भागी आ रही थीं।

पाँच ही मिनट में हम घर में थे। माया अपनी जगह पर बैठी अपनी गुड़िया ज़िनाईदा के लिए एक नई पोशाक सिल रही थी। "कुछ हुआ?" हमने पूछा।

"कुछ नहीं।"

"इनक्युबेटर को देखे तुम्हें कितनी देर हो गई?"

"बहुत देर हुई। अण्डे पलटते वक्त देखा था।"

मीश्का इनक्युबेटर के पास गया। अपनी गर्दनें झुकाए और पंजों के बल खड़े लड़कों ने उसे घेर रखा था। वान्या लोज़्किन अच्छी तरह देखने के लिए कुर्सी पर चढ़ गया था। वह उससे गिर पड़ा और साथ में ल्योशा कूरोच्किन को भी लगभग गिराता गया। लेकिन मीश्का इनक्युबेटर को खोलने की हिम्मत नहीं बाँध सका। उसको देखते डर लग रहा था।

"अरे, खोलो भी उसे! तुम किस चीज का इन्तजार कर रहे हो?" किसी ने कहा। आखिर मीश्का ने ढक्कन उठाया। बड़ी सफेद गोलियों जैसे अण्डे पहले ही की तरह पड़े हुए थे।

कुछ देर मीश्का चुपचाप खड़ा रहा। फिर उसने सावधानी से उनको एक-एक करके सभी ओर से देखते हुए पलट दिया।

"एक भी दरार नहीं है!" उसने भारी दिल से बताया।

अपराधी कौन?

लड़के चुप्पी साधे चारों ओर खड़े थे। "शायद वे निकलें ही न," सेन्या बोब्रोव बोला। "क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है?"

मीश्का ने कन्धे उचका दिए, "मैं कैसे बता सकता हूँ? मैं कोई मुर्गी तो हूँ नहीं! चूज़े निकलने के बारे में मैं क्या जानूँ?"

हर कोई एक साथ बोलने लगा। किसी ने कहा, चूज़े निकलेंगे ही नहीं। किसी ने कहा वे अभी भी निकल सकते हैं, तो दूसरों ने कहा कि या तो वे निकलेंगे या नहीं निकलेंगे। आखिर वीत्या स्मिर्नोव ने सारी बहस बन्द कर दी।

"अभी कोई पक्की बात कहना कठिन है," वह बोला। "दिन अभी पूरा नहीं हुआ है। हमें पहले जैसे ही काम जारी रखना चाहिए। अब ड्यूटी वाले लड़कों को छोड़कर सब अपने-अपने घर चले जाएँ।"

लड़के घर चले गए। मीश्का और मैं अकेले रह गए। हमने अण्डों पर फिर एक नज़र डाली। ताकि अगर कहीं एकाध छोटी-सी दरार हो तो दिखाई दे जाए, लेकिन कुछ भी नहीं दिखाई दिया। मीश्का ने ढक्कन बन्द कर दिया।

"ठीक है, मुझे कोई परवाह नहीं कि क्या होता है! वैसे भी अभी से परेशान होना ठीक नहीं। शाम तक हम इन्तज़ार करेंगे और अगर तब भी कुछ न हुआ, तो फिर हम चिन्ता करना शुरू कर सकते हैं।"

हमने निश्चय किया कि हम ज़रा भी फिक्र नहीं करेंगे और शान्ति से इन्तज़ार करेंगे। लेकिन ऐसा कहना करने से आसान था। कितनी ही कोशिश करने पर भी हम चिन्ता किए बिना न रह सके और हर दस मिनट बाद हम इनक्युबेटर में झाँकते रहे। दूसरे लड़कों को भी चिन्ता थी। वे पूछने के लिए आते ही रहे। हर किसी का एक ही प्रश्न था, "क्यों, कैसा चल रहा है?"

कुछ समय बाद मीश्का ने उत्तर देना छोड़ दिया और सिर्फ कन्धे उचकाना शुरू कर दिया। लेकिन उसको इतनी बार कन्धों को उचकाना पड़ा कि शाम तक वे चढ़कर उसके कानों तक आ गए।

शाम बीतने के साथ लड़कों का आना भी बन्द हो गया। वीत्या ही सबके बाद आया। बहुत देर तक वह हमारे साथ बैठा।

"कहीं तुमसे हिसाब में गलती तो नहीं हो गई?" वह बोला।

हमने फिर से गिनना शुरू किया, लेकिन उसमें कहीं कोई गलती नहीं थी। यह इक्कीसवाँ दिन था और वह भी अब ढलने लगा था, लेकिन चूज़ा एक भी न निकला था।

"कोई बात नहीं," वीत्या ने हमें दिलासा देने के लिए कहा। "हम सबेरे तक इन्तज़ार कर लेंगे। वे शायद रात भर में निकल आएँ।"

मैंने अपनी माँ से मीश्का के यहाँ रहने की अनुमति ले ली। हमने सारी रात बैठने तथा निगरानी करने का निश्चय किया। हम इनक्युबेटर के पास बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे। बोलने के लिए अब कुछ नहीं रह गया था। अब हम ख्याली पुलाव भी नहीं पका सकते थे, हमारी सारी आशाएँ टूट चुकी थीं। जल्दी ही ट्रामें बन्द हो गईं और सब ओर सन्नाटा छा गया। खिड़की से दिखने वाला सड़क का लैम्प भी बुझ गया। मैं सोफे पर लेट गया। मीश्का कुर्सी पर बैठा-बैठा ऊँघ रहा था। एक बार तो वह लगभग गिर ही पड़ा, इसलिए वह आकर सोफे पर ही मेरे पास लेट गया और हम सो गए।

जब हम जागे तो दिन निकल चुका था और हर चीज़ पहले जैसी थी। इनक्युबेटर में अण्डे वैसे के वैसे पड़े हुए थे। न किसी में कोई दरार आयी थी और न किसी से कोई आवाज़ ही आ रही थी। सब लड़के बहुत ही निराश हुए। "हो क्या सकता है?" उन्होंने पूछा। "हमने तो सभी हिदायतों का ध्यान से पालन किया है, या नहीं किया है?"

"मैं कुछ नहीं जानता," मीश्का ने कन्धे उचकाते हुए उत्तर दिया।

अकेला मैं ही जानता था कि क्या हुआ है। जिस रात मैं असावधानी से सोता रह गया था, भ्रूण बेशक उसी रात को नष्ट हो चुके थे। ताप नीचा हो गया था और वे ठण्ड से मर गए थे – अपनी ज़िन्दगी के ठीक से शुरू होने से पहले ही। सबके सामने मैंने अपने-आप को अपराधी अनुभव किया। उनकी सारी मुसीबतें बेकार जाएँगी और यह सब बस मेरे कारण! लेकिन मैं उनको यह सब बता नहीं पाया। मैंने फैसला किया कि मैं सारा दोष बाद में मान लूँगा, जब लड़के इस घटना को भूल जाएँगे और चूज़े न पाने की बात उन्हें इतनी बुरी नहीं लगेगी।

उस दिन स्कूल में हम सब लोग बहुत ही उदास रहे। सब लड़के हमारी ओर इतनी हमदर्दी के साथ देख रहे थे मानो हम किसी की मौत का शोक मना रहे हों। और जब सेन्या बोब्रोव के मुँह से आदत के चलते हमारे लिए "चूजादीन" निकल गया, तब सभी उसके ऊपर टूट पड़े और कहने लगे कि उसे खुद पर शर्म आनी चाहिए। मीश्का को और मुझे बड़ी परेशानी हुई।

"काश कि वे हमें कोसते!" मीश्का बोला।

"और क्यों?"

"अच्छा, ज़रा सोचो कि उन्होंने हमारे लिए क्या-क्या किया है। हमसे नाराज होने का उन्हें पूरा-पूरा अधिकार है।"

स्कूल के बाद कुछ लड़के हमारे यहाँ आए, लेकिन जल्द ही उन्होंने आना बन्द कर दिया। सिर्फ कोस्त्या देव्यात्किन एक-दो बार आया। वही एक ऐसा था जिसने अब तक आशा नहीं छोड़ी थी।

"देखा," मीश्का ने मुझसे कहा। "अब सब लड़के हमसे नाराज़ हो गए हैं। और मैं पूछता हूँ, भला क्यों? हर कोई गलती कर ही सकता है।"

"लेकिन खुद तुम्हीं ने तो कहा था कि उन्हें नाराज़ होने का अधिकार है।"

"हाँ, है," मीश्का ने चिढ़कर उत्तर दिया। "और सो तुम्हें भी है। मैं जानता हूँ कि यह सब मेरा ही दोष है।"

"भला यह तुम्हारा दोष क्यों है? कोई भी तुम पर किसी बात का दोष नहीं लगा रहा। न ही इसमें तुम्हारा ज़रा भी कसूर है," मैं बोला।

"नहीं, यह मेरी ही गलती है। लेकिन तुम मुझ पर बहुत गुस्सा तो नहीं होगे न, बोलो?"

"भला क्यों?"

"मैं इतना निकम्मा जो हूँ! यह सब मेरी बदकिस्मती के कारण है। कुछ करूँ, उसका कभी कुछ अच्छा नतीजा न निकलेगा।"

"यह ठीक नहीं है। मुझसे ही हर बात बिगड़ जाती है," मैंने कहा। "यह सब मेरा ही कसूर है।"

"नहीं, तुम्हारा दोष नहीं है। गलती मेरी ही है। मैंने ही चूज़ों को मारा है।"

"तुम उन्हें कैसे मार सकते हो?"

"मैं तुम्हें बता दूँगा, लेकिन पहले मुझ पर नाराज़ न होने का वचन दो," मीश्का बोला। "एक बार मुझे सुबह-सबेरे नींद आ गई और जब मैं जागा और तापमापी की ओर देखा, तो पारा 40 डिग्री पर था। मैंने अण्डों को ठण्डा करने के लिए तुरन्त ढक्कन खोल दिया, लेकिन मेरे ख्याल से बहुत देर हो चुकी थी।"

"यह कब की बात है?"

"पाँच दिन पहले की।"

मीश्का अपराधी तथा दुखी लग रहा था।

"खैर, तुम चिन्ता न करो," मैंने उससे कहा। "अण्डे उससे पहले ही खराब हो चुके थे।"

"किससे पहले?"

"उस दिन, तुम्हारे ज़्यादा देर तक सोए रहने से पहले।"

"किसने खराब किया उन्हें?"

"मैंने।"

"तुमने? कैसे?"

"मैं ज्यादा सो गया और ताप नीचे चला गया और अण्डे खराब हो गए।"

"यह कब हुआ?"

"दसवें दिन।"

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया?"

"मुझे कबूल करते डर लग रहा था। मैंने सोचा कि शायद चूजे न ही मरे हों, लेकिन अब मैं जानता हूँ कि वे मर गए थे और मैंने ही उन्हें मारा है।"

"और तब भी तुमने लड़कों से वह सारा काम बेकार करवाया", मेरी तरफ गुस्से से देखते हुए मीश्का ने कहा, "सिर्फ इसलिए कि कबूल करते तुम्हें डर लगता था।"

"मैंने सोचा था कि शायद सब-कुछ ठीक ही निकल आएगा। और लड़के किसी भी हालत में काम जारी रखने का ही निश्चय करते, नहीं तो हमें कभी पता न चलता कि चूजे मरे हैं या नहीं।"

"अच्छा, जारी रखने का ही निश्चय करते!" मीश्का ने क्रोध से कहा। "कुछ भी हो, तुम्हारा फर्ज था कि शुरू में ही सब कुछ बता देते। बजाय इसके कि तुम सबकी तरफ से फैसला कर लो, हम सब मिलकर सोच-विचार करके फैसला लेते।"

"देखो," मैं बोला। "मेरे ऊपर क्यों बिगड़ रहे हो? तुमने खुद अपनी बात पहले क्यों नहीं बतायी? तुम भी तो ज्यादा सोए न, या नहीं?"

"हाँ, सोया," मीश्का ने पश्चाताप के स्वर में कहा। "मैं सचमुच सूअर हूँ। चाहो तो मेरी नाक पर मुक्के मार लो।"

"मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला। लेकिन देखना, मैंने जो कुछ तुम्हें बताया है, वह जाकर दूसरों से मत कह देना।" मैं बोला।

"मैं कल उन्हें बता दूँगा। तुम्हारे बारे में नहीं, खुद अपने बारे में। हर किसी को मालूम हो जाए कि मैं कैसा सूअर हूँ। मेरी यही सजा होगी।"

"ठीक है, तब मैं भी कबूल कर लूँगा," मैंने कहा।

"नहीं, तुम ऐसा मत करना।"

"क्यों?"

"देखो, तुम जानते हो कि वे कैसे लोग हैं। वे हम पर हँसते हैं, क्योंकि हम हर काम मिलकर करते हैं।

हम स्कूल साथ-साथ जाते हैं, अपने पाठ साथ-साथ तैयार करते हैं, और कम नम्बर भी साथ-साथ ही पाते हैं। अब वे कहेंगे कि निगरानी करते हुए, ज्यादा सो जाने में भी हमने एक-दूसरे का साथ दिया है।"

"वे जो चाहें कहें," मैंने कहा। "अलावा इसके क्या यह हो सकता है कि वे तुम्हारी खिल्ली उड़ाएँ और मैं खड़ा-खड़ा देखता रहूँ?"

आशा टूट जाने के बाद

वह दुख भरा दिन समाप्त हुआ और फिर शाम घिर आई। रसोई-घर की हालत में कोई फर्क नहीं आया। इन्क्युबेटर गरम था, लैम्प अभी भी जल रहा था, लेकिन हमारी आशाएँ खत्म हो चुकी थीं। मीश्का उसे अपने हाथ में लिए अण्डे की ओर टकटकी लगाए चुपचाप बैठा था। हम निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें। उसको तोड़कर देख लें या कुछ देर और इन्तज़ार करें। यकायक मीश्का चौंक उठा और मेरी तरफ फटी-फटी आँखों से देखने लगा। मैंने सोचा कि उसने मेरे पीछे कोई भूत देखा है और इसलिए मैंने जल्दी से घूमकर देखा। लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था। मैं फिर मीश्का की ओर मुड़ गया।

"देखो!" उसने अपना अण्डेवाला हाथ मेरी तरफ बढ़ाते हुए फटी हुई आवाज में कहा।

पहले तो मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दिया, लेकिन फिर एक जगह पर बाल-जैसी कोई चीज नजर आई।

"तुमने इसको किसी चीज से टकराया तो नहीं?" मीश्का ने सिर हिलाकर इंकार किया।

"तो....तो क्या चूजे ने ऐसा किया है?" मीश्का ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"तुम्हें पक्का विश्वास है?" मीश्का ने कन्धे उचका दिए।

मैंने अपने नाखून से खोल के फटे हुए टुकड़े को सावधानी से ऊपर उठाया, जिससे अण्डे में एक छोटा-सा छेद बन गया। उसी क्षण एक नन्हीं -सी पीली चोंच ने अपने-आपको छेद में से निकाला और फिर गायब हो गयी।

हम इतने उत्तेजित हो गए कि मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाल सके। बस हमने एक-दूसरे को खुशी के मारे कसकर भींच लिया।

"भई वाह! हो गया!!" मीश्का चिल्लाया और ठहाका मारकर हँस पड़ा। "अब हम कहाँ की दौड़ मारें? सबसे पहले कहाँ जाएँ?"

"एक मिनट ठहरो!" मैंने कहा, "ऐसी क्या जल्दी है? कहाँ जाना चाहते हो?"

"हमें जल्दी से जाकर लड़कों को बताना है!" वह दरवाज़े की तरफ भागा।

"ठहरो!" मैं बोला। "पहले अण्डे को तो वापस रखो। मेरे ख्याल से इसे तो तुम अपने साथ नहीं ले जा रहे, न!" मीश्का ने लौटकर अण्डे को इनक्युबेटर में रख दिया। इसी समय कोस्त्या अन्दर आया।

"हमें एक चूजा मिल भी गया!" मीश्का चिल्लाया।

"तुम झूठ बोल रहे हो!"

"नहीं भई, ईमान से।"

"कहाँ है वह?"

मीश्का ने इनक्युबेटर का ढक्कन उठाया और कोस्त्या ने अन्दर झाँका। "चूज़ा कहाँ है? यहाँ तो मुझे बस अण्डे ही नज़र आते हैं।"

मीश्का भूल गया था कि बाल पड़ा अण्डा उसने कहाँ रख दिया है और अब उसे वह अण्डा नहीं मिल रहा था। आखिर वह उसे मिल ही गया और उसने उसे कोस्त्या को बड़ी शान के साथ दिखाया।

कोस्त्या खुशी से चीख पड़ा, "देखो, देखो, इसमें से एक असली चूज़े की चोंच बाहर आ रही है!"

"हाँ, हाँ, वह असली है। क्या तुम यह समझे कि यह कोई सरकस का खेल या कुछ और है?"

"अच्छा देखो, तुम इस अण्डे को पकड़े रहो। मैं जाकर औरों को बुला लाता हूँ," कोस्त्या बोला।

"ठीक है। जाओ, उन्हें ले आओ। उनको विश्वास नहीं था कि एक भी चूज़ा पैदा होगा। सारी शाम किसी ने झाँका भी नहीं।"

"इस बात में तुम गलती पर हो। वे सब मेरे घर पर हैं, और उन्हें अभी भी चूज़ों के पैदा होने का विश्वास है। लेकिन वे तुम्हें परेशान नहीं करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ खबर लेने भेजा है।"

"वे झिझक क्यों रहे थे?"

"देखो, वे जानते थे कि तुम्हें इससे कितना बुरा लग रहा होगा और वे बीच में नहीं पड़ना चाहते थे।"

कोस्त्या बाहर भागा और हमने उसके एक साथ तीन-तीन सीढ़ियाँ लाँघने की आवाज़ें सुनीं।

"भई वाह!" मीश्का चिल्लाया। "मैंने अभी तक माँ को बताया ही नहीं!"

वह अपनी माँ को बुलाने दौड़ा। मैंने भी अण्डे को उठाया और अपनी माँ को दिखाने के लिए दौड़ा।

माँ ने अण्डा देखा और मुझसे तुरन्त जाकर इनक्युबेटर में रख देने के लिए कहा, ताकि अण्डा ठण्डा न पड़ जाए और चूज़े को सर्दी न लग जाए।

मैं वापस मीश्का के यहाँ दौड़ा और देखा कि रसोई-घर में मीश्का बेतरह बौखलाया हुआ है और उसके माँ तथा पिताजी हँस रहे हैं। मुझे देखते ही मीश्का मुझ पर झपट पड़ा, "तुमने देखा कि मैंने उस अण्डे को कहाँ रखा है? मैंने पूरा इनक्युबेटर छान डाला है, लेकिन मुझे वह कहीं नहीं मिला!"

"कौन-सा अण्डा?"

"तुम जानते हो... वह, जिसमें चूज़ा है!"

"यह रहा वह," मैंने कहा।

जब मीश्का ने मेरे हाथों में अण्डा देखा तो उसे जैसे दौरा ही पड़ गया। "बेवकूफ, गधे! अण्डे को लेकर भाग जाने का क्या मतलब?"

"छी, छी," मीश्का की माँ ने कहा। "एक अण्डे के पीछे इतना हंगामा!"

"लेकिन माँ, यह कोई मामूली अण्डा नहीं है। जरा देखो तो इसे!"

मीश्का की माँ ने अण्डे को उठाया और छेद में से नजर आने वाली नन्हीं-सी चोंच देखी। उसके पिताजी ने भी देखा। "हूँ..." मुस्कराते हुए उन्होंने कहा। "अनोखी बात है!"

"इसमें अनोखा कुछ नहीं है," मीश्का ने जरा शान भरे लहजे में कहा। "यह तो केवल एक प्राकृतिक घटना है।"

"तुम खुद भी तो एक प्राकृतिक घटना हो," मीश्का के पिताजी हँस पड़े। "चूजे में बेशक कोई अनोखी बात नहीं है। अनोखी बात यह है कि यह तुम्हारे बनाए इनक्युबेटर से निकला है। मैं मानता हूँ कि मैंने नहीं सोचा था कि इससे कुछ भी निकलेगा।"

"फिर आपने कुछ कहा क्यों नहीं?"

"मैं क्या कहता? रास्ते पर यूँ ही भटकते रहने की बजाय तुम्हारा इनक्युबेटर में लगे रहना मेरे लिए ज्यादा अच्छा था।"

इसी समय माया रसोई-घर में आयी। वह अभी-अभी सोकर उठी थी। हमने उसे अण्डे को एक-दो मिनट हाथ में लेने दिया। उसने छेद से अपनी आँख लगायी और तभी चूजे ने अपनी चोंच बाहर निकाली।

माया चीख पड़ी। "वह मुझे चोंच मारना चाहता है!" वह चिल्लायी। "ओ, नटखट नन्हे चूजे, अभी खोल से निकला भी नहीं और अभी से लड़ने को तैयार!"

"ऐसे नए जन्मे चूजे पर तुम्हें इस तरह चिल्लाना नहीं चाहिए!" मीश्का ने कहा। उसने अण्डे को लेकर फिर इनक्यूबेटर में रख दिया।

बाहर सीढ़ियों पर शोर और दौड़ते हुए पैरों की आवाज सुनाई दी। जल्दी ही रसोई-घर लड़कों से भर गया। अण्डे को फिर बाहर निकालकर सबको दिखाना पड़ा। हर कोई छेद में से चूजे को देखना चाहता था। "दोस्तो," मीश्का ने चिल्लाकर कहा, "अण्डा वापस दे दो। उसको इनक्युबेटर में तुरन्त रख देना चाहिए, नहीं तो चूजे को ठण्ड लग जाएगी।" लेकिन किसी ने भी मीश्का के कहने पर ध्यान नहीं दिया। हमें अण्डे को जबरन लेना पड़ा।

"दूसरे अण्डों में अब तक बाल नहीं पड़ा?" वीत्या ने पूछा। हमने बाकी अण्डों की जाँच-पड़ताल की,

लेकिन औरों में कहीं कोई निशान न था। "शायद बाद में उनमें भी हो जाए," लड़कों ने कहा।

"कोई बात नहीं," मीश्का ने कहा। "अगर सिर्फ एक ही चूजा पैदा हुआ, तो भी मुझे खुशी ही होगी। कम से कम हमारी मेहनत तो बेकार नहीं गयी!"

"क्या हमें अण्डे को तोड़कर चूजे को बाहर नहीं निकाल देना चाहिए?" सेन्या बोब्रोव ने पूछा। "अन्दर बैठे-बैठे उसे आराम नहीं मिलता होगा।"

"अरे नहीं," मीश्का बोला। "खोल को ज़रा-भी हाथ नहीं लगाना चाहिए। चूजे की खाल अभी बहुत नरम है और उसको चोट पहुँच सकती है।"

काफी समय बीतने पर ही लड़के आखिर वहाँ से गए। सब वहीं रहना और चूजे को खोल में से बाहर आते देखना चाहते थे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उनको घर लौटना था।

"कोई बात नहीं," मीश्का बोला। "यही कोई अकेला चूज़ा नहीं है। तुम देखोगे कि जल्दी ही और चूजे भी बाहर आएँगे।"

लड़कों के घर जाने के बाद मीश्का ने एक बार फिर अण्डों का निरीक्षण किया और उसे एक दूसरे अण्डे पर भी बाल नज़र आया।

"देखो, देखो," वह चीख पड़ा। "ग्यारहवें से भी चूज़ा निकल रहा है!"

मैंने देखा और सचमुच जिस अण्डे पर "। ।" लिखा हुआ था, उस पर बाल आ गया था।

"कैसी बुरी बात है कि लड़के घर चले गए," मैंने कहा। "अब इतनी देर हो गई है कि उनके पीछे जाना सम्भव नहीं।"

"हाँ, सचमुच बुरी बात है!" मीश्का बुदबुदाया। "लेकिन कोई हर्ज नहीं, कल वे बाहर निकले चूजे ही देख लेंगे।" हम इनक्युबेटर के पास बैठ गए। खुशी से हमारा दिल उमड़ रहा था।

"हम-तुम सचमुच किस्मत वाले हैं," मीश्का बोला। "मैं शर्त लगाकर कहता हूँ कि बहुत ही कम लोग हमारे जैसे खुशकिस्मत हैं।"

रात हो गई। सब लोग बहुत पहले ही सो चुके थे, लेकिन मीश्का और मुझे नींद ने जैसे छुआ ही नहीं।

समय तेज़ी से बीत गया। सवेरे लगभग दो बजे दो और अण्डों पर बाल आया – आठवें और दसवें पर। और अगली बार जब हमने इनक्युबेटर में देखा तो वहाँ एक सचमुच का आश्चर्य हमारा इन्तज़ार कर रहा था। अण्डों के बीच में एक नन्हा-सा नवजात चूजा बैठा था। वह अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन लुढ़ककर गिर-गिर जाता था।

मैं खुशी से फूला नहीं समाया। मैंने चूजे को उठाया। वह अब भी गीला था और उसकी कोमल गुलाबी पीठ पर परों की बजाय रेशमी पीले रंग के रोएँ चिपके हुए थे।

मीश्का ने बर्तन खोला और मैंने चूज़े को अन्दर रख दिया। फिर नीचे के बर्तन में हमने गर्म पानी डाला, ताकि चूज़ा गर्म रहे।

"भीतर खासी गर्मी है, वह जल्दी ही सूख जाएगा और फिर सुन्दर तथा रोएँदार दिखने लगेगा," मीश्का बोला।

उसने इनक्युबेटर में से खोल के दोनों आधे टुकड़े निकाले। "कितने अचरज की बात है कि इतना बड़ा चूज़ा इस छोटे-से खोल में समाया हुआ था!"

और सचमुच ही खोल की तुलना में चूज़ा बहुत बड़ा दिखाई दे रहा था। लेकिन कवच के अन्दर आखिर वह दबा-सकुचा हुआ बैठा था। पैरों को अपने बदन के नीचे मोड़े हुए और गर्दन को घुमाए हुए। अब वह सीधा तन गया था तथा अपने पतले छोटे-से पैरों पर अपनी गर्दन ताने खड़ा था।

मीश्का टूटे हुए खोल की ओर देखते-देखते अचानक चीख उठा, "अरे देखो, यह तो गलत चूज़ा है!"

"गलत चूज़ा यानी?"

"अरे, यह पहले वाला नहीं है! सबसे पहले तो पाँचवाँ खोल ही तड़का था और यह ग्यारहवाँ है।"

खोल पर सचमुच ही "।।" लिखा हुआ था। हमने इनक्युबेटर में देखा। पाँचवाँ अण्डा जहाँ हमने रखा था वहीं पड़ा था।

"इसे क्या हो गया है?" मैं बोला। "सबसे पहले तो इसी ने खोल को तोड़ा था, और अब बाहर ही नहीं आता!"

"शायद यह इतना कमज़ोर है कि खोल को खुद नहीं तोड़ सकता," मीश्का बोला। "उसे ज़रा आराम करने दो। शायद वह कुछ ताकतवर हो जाए।"

हमारी गलती

हम काम में ऐसे लगे कि हमें सवेरा हो जाने का तभी पता चला जब हमने खिड़की में से चमकते हुए सूरज को देखा। सूरज की किरणें रसोई-घर के फर्श पर खेल रही थीं और कमरे को प्रकाशित और सुहावना बना रही थीं।

"तुम देखोगे कि लड़के अभी आते ही होंगे," मीश्का बोला। "उनसे ज़रा भी रुका न जाएगा।" मीश्का के मुँह से शब्द अभी निकले ही थे कि उनमें से दो आ भी गए – जेन्या और कोस्त्या।

"चमत्कार देखना चाहते हो?" मीश्का चिल्लाया और उसने बर्तन में से नवजात चूज़े को उठाया। "यह रहा प्रकृति का चमत्कार।"

लड़कों ने गम्भीरता के साथ चूज़े की जाँच की।

"तीन और अण्डों में बाल आ गया है," मीश्का ने अभिमान के साथ बताया। "देखो, ये हैं नम्बर पाँच, आठ और दस।"

चूज़े को ठण्ड बिलकुल अच्छी नहीं लग रही थी। हमारे हाथों में वह बेचैनी से कुड़बुड़ा रहा था, लेकिन बर्तन में रखते ही तुरन्त शान्त हो गया।

"तुमने उसे कुछ खिलाया-पिलाया भी है?" कोस्त्या ने पूछा।

"अरे नहीं," मीश्का बोला। "अभी वह खाने लायक नहीं हुआ। पैदा होने के एक दिन बाद ही उनको खिलाया जाता है।"

"तुम दोनों रात को बिलकुल नहीं सोए?" जेन्या ने प्रश्न किया।

"नहीं.... हम बहुत व्यस्त थे।"

"तो अब जाकर ज़रा सो जाओ। कुछ देर के लिए हम सम्भाल लेंगे," कोस्त्या ने सुझाव दिया।

"ठीक है। लेकिन वायदा करो कि अगर और कोई चूज़ा हुआ, तो हमें जगा दोगे।"

"निश्चय ही।"

मीश्का और मैं पलंग पर लेट गए और तुरन्त सो गए। सच कहूँ, तो मुझे बहुत देर से नींद आ रही थी। लड़कों ने हमें करीब दस बजे जगा दिया। "आओ, और यह चमत्कार नम्बर 2 देख लो!" कोस्त्या ने चिल्लाकर कहा।

"चमत्कार नम्बर कितना?" मैं आधी नींद में बड़बड़ाया। मैंने आँखें खोलकर इधर-उधर देखा। रसोई-घर लड़कों से भर गया था।

"वह रहा!" वे चिल्लाए और उन्होंने बर्तन की ओर संकेत किया।

मीश्का और मैं उछलकर बर्तन के पास पहुँचे। उसमें अब दो चूज़े थे – एक रोएँदार, गोल-मटोल और दूसरा अण्डे की ज़र्दी की तरह पीला।

"ऐसा सुन्दर!"

"कैसा खूबसूरत है!" मैंने कहा। "लेकिन यह पहलेवाला ऐसा मरियल क्यों नजर आता है?" लड़के हँस पड़े।

"पहला चूज़ा वह है!"

"कौन-सा?"

"वही जो रोएँदार है।"

"नहीं, नहीं, वह नहीं है। वह तो यह दुबला-पतला है।"

"वह दुबला-पतला तो अभी-अभी पैदा हुआ है। पहला चूजा सूख गया है और इसीलिए वह रोएँदार है।"

"है न जोरदार बात!" मैंने कहा, "तब तो दूसरा चूजा भी सूखकर ऐसा ही रोएँदार हो जाएगा?"

"बेशक।"

"यह दूसरा चूजा कौन-से नम्बर का है?" मीश्का ने पूछा। लड़के उलझन में पड़ गए।

"मेरा ख्याल था कि तुम्हें मालूम है कि सब अण्डों पर नम्बर पड़े हुए हैं," मीश्का बोला।

"नहीं, हमने किसी नम्बर को नहीं देखा," कोस्त्या बोला।

"हम खोल से देख सकते हैं," मैंने कहा। "खोल अभी अन्दर ही है।"

मीश्का ने इनक्युबेटर में देखा और चीख पड़ा, "देखो, देखो! अन्दर दो और एकदम नए चूजे हैं!"

हर कोई इनक्युबेटर की ओर झपटा। मीश्का ने सावधानी से दोनों नए चूजों को उठाया और हमें दिखाया। "यह रही असली बाजी!" मीश्का ने अभिमान से कहा।

हमने उनको अन्य दो चूजों के साथ गर्म बर्तन में रख दिया। अब हमारे पास चार चूजे थे। वे गर्मी के लिए एक दूसरे से सटकर बैठे थे। मीश्का ने इनक्युबेटर में से टूटे हुए खोल निकाले और नम्बर देखे।

"नम्बर चार, आठ और दस," वह बोला। "लेकिन कौन-सा कौन है?"

सचमुच अब यह नहीं कहा जा सकता था कि वे किस-किस खोल से निकले हैं। लड़के हँसते रहे। "पाँचवाँ अभी भी इनक्युबेटर में ही पड़ा है।" मैंने कहा।

"हाँ," मीश्का बोला। "उसे क्या हो गया? मर तो नहीं गया?" हमने पाँचवाँ अण्डा बाहर निकाला और उसका छेद जरा खोलकर देखा। बच्चा चुपचाप अन्दर पड़ा हुआ था। उसने अपनी गर्दन हिलाई। "वाह, यह जिन्दा है!" हम चिल्लाए और उसको फिर से इनक्युबेटर में रख दिया।

मीश्का ने शेष अण्डों की भी जाँच-पड़ताल की। तब मालूम हुआ कि नम्बर तीन में भी बाल आ गया है। लड़कों ने जोरों से तालियाँ बजायीं।

सारा वातावरण आनन्द से गूँजने लगा! थोड़ी देर बाद माया अन्दर आयी। हमने उसे चूजे दिखलाए।

"यह बच्चा मेरा है!" रोएँदार चूजे को छीनने की कोशिश करते हुए वह बोली।

"एक मिनट ठहरो," मैंने कहा। "छीनो मत। उसे कुछ देर गर्म बर्तन में रहना चाहिए, नहीं तो उसे ठण्ड लग जाएगी।"

"ठीक है, मैं उसे बाद में ले लूँगी। लेकिन मैं इस मोटे-ताजे चूजे को ही लूँगी। मुझे मरियल चूजा नहीं चाहिए।"

उस दिन रविवार था। स्कूल न होने के कारण लड़कों ने पूरा दिन मीश्का के रसोई-घर में ही बिताया।

कोई कुर्सी पर, कोई मेज पर, तो कोई स्टूल पर बैठा था। मीश्का और मैं सम्मान के स्थान पर, इनक्युबेटर के पास बैठे थे। दाहिनी तरफ, अँगीठी के पास था गर्म बर्तन जिसमें नवजात चूजे रखे हुए थे। अँगीठी के ऊपर गरम पानी का बर्तन था, और खिड़की पर थीं पेटियाँ जिनमें चमकदार हरे रंग की जई उग आयी थी। लड़के हँसते, मज़ाक करते और रोचक कहानियाँ सुनाते रहे।

"तुम्हें पता लगा कि जिस दिन इन्हें निकलना चाहिए था, वे उसी दिन क्यों नहीं निकले?" एक लड़के ने पूछा। "तुम्हें शुक्रवार के दिन इनके होने की आशा थी, है ना?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों हुआ," मीश्का ने उत्तर दिया। "किताब में लिखा हुआ है कि वे इक्कीसवें दिन पैदा होते हैं और आज तो तेईसवाँ दिन है। हो सकता है कि किताब में गलत लिखा हो।"

"अगर किसी ने गलती की है, तो तुमने ही," ल्योशा बोला। "तुमने इनक्युबेटर में अण्डे कब रखे थे?"

"तीन तारीख को। उस दिन शनिवार था। मुझे अच्छी तरह याद है, क्योंकि अगले दिन रविवार था।"

"सुनो," जेन्या स्कवोर्त्सोव बोला। "कहीं पर कुछ गलती जरूर है। तुमने शनिवार के दिन अण्डों को अन्दर रखा और इक्कीसवाँ दिन शुक्रवार को हुआ।"

"वह ठीक कहता है," वीत्या स्मिर्नोव ने कहा। "अगर तुमने शनिवार को शुरू किया, तो इक्कीसवाँ दिन शनिवार को ही आना चाहिए। सप्ताह में सात दिन होते हैं और इक्कीस दिन का अर्थ है ठीक तीन सप्ताह।"

"सात तिया इक्कीस!" सेन्या बोबोव ने हँसते हुए कहा। "कम से कम पहाड़ों में तो यही है।"

"पहाड़ों में क्या है मैं नहीं जानता, लेकिन हमने तो यही हिसाब लगाया था," मीश्का गुस्से से बोला।

"तुमने कैसे गिना था?"

"मैं बताता हूँ," मीश्का बोला और अपनी उँगलियों पर गिनने लगा। "तीन तारीख को पहला दिन था, चार तारीख को दूसरा, पाँचवीं तारीख को तीसरा...."

उसने इसी तरह गिना और इक्कीसवाँ दिन शुक्रवार को आया।

सेन्या भी उलझन में पड़ गया। "यह तो विचित्र बात है। पहाड़ों के हिसाब से इक्कीसवाँ दिन शनिवार को होता है। और जब तुम उँगलियों पर गिनते हो तो वह शुक्रवार को आता है।"

"फिर से दिखाओ कि तुमने कैसे गिना," जेन्या ने कहा।

"देखो," मीश्का ने फिर से उँगलियों को मोड़ते हुए कहा। "शनिवार – तीन तारीख को पहला दिन, रविवार – चार तारीख को दूसरा दिन...."

"एक मिनट! तुम गलती कर रहे हो! अगर तुमने तीसरी तारीख को शुरू किया था तो तुम्हें वह दिन नहीं गिनना चाहिए।"

"क्यों?"

"क्यों कि वह दिन पूरा नहीं हुआ था। चार तारीख को वह पूरा हो गया। इसका मतलब है कि हमें चार तारीख से ही गिनना चाहिए।"

यकायक मीश्का और मैं पलक झपकते इसे समझ गए। मीश्का ने नए तरीके से गिनना शुरू किया और अब ठीक उत्तर निकाला।

"बेशक," वह बोला। "इक्कीसवाँ दिन कल ही था।"

"तब तो हर बात ठीक ही हुई," मैंने कहा। "हमने शनिवार की शाम को इनक्युबेटर में अण्डे रखे थे और पहला बाल शनिवार की शाम को ही नजर आया। ठीक इक्कीसवें दिन के बाद।"

"देखा, ठीक से गिनने पर कितनी परेशानी से बचा जा सकता है," वान्या लोज्किन ने कहा। सब हँस पड़े।

"ठीक बात है," मीश्का बोला। "अगर हमने यह गलती न की होती, तो हम काफी तकलीफ और परेशानी से बच जाते।"

जन्मदिन

उस दिन के ढलने तक गर्म बर्तन में दस चूज़े बैठे हुए थे। आखिरी चूज़ा नम्बर 5 ही था। वह किसी भी प्रकार अपने खोल से बाहर आने को तैयार न था और उसे बाहर आने में मदद देने के लिए हमने आखिर अण्डे का सिरा तोड़ दिया। अगर हमने ऐसा न किया होता तो वह अब भी वहीं बैठा रहता। दूसरे चूज़ों की तुलना में वह छोटा और दुबला था, शायद इसलिए कि वह खोल में इतनी ज्यादा देर तक रहा था।

शाम तक इनक्युबेटर में केवल दो अण्डे बाकी रह गए। वहाँ अकेले पड़े-पड़े वे बहुत उदास दिखाई दे रहे थे। उन पर अभी भी बाल का कोई निशान नहीं था। हमने इनक्युबेटर में लैम्प जलता रहने दिया, लेकिन उस रात भी वे नहीं फूटे। नवजात चूज़ों ने गर्म बर्तन में रात बड़े आराम से काटी और सबेरे हमने उनको नीचे फर्श पर रख दिया।

दस पीले रोएँदार गोले अपनी ताकत भर चीं-चीं कर रहे थे। वे अपनी छोटी-छोटी आँखें मिचमिचाते थे और तेज़ रोशनी से मुँह फेर लेते थे। कुछ अपने छोटे-से पैरों पर अच्छी तरह खड़े थे, तो कुछ अब भी लड़खड़ा रहे थे। कुछ तो दौड़ने की भी कोशिश करते थे, लेकिन इसमें वे उस्ताद नहीं थे। कभी-कभी वे फर्श के छोटे-छोटे धब्बों पर तथा फर्श की पट्टियों की कीलों के चमकीले सिरों पर अपनी नन्ही चोंचों से ठुकठुकाते थे।

"देखो, देखो, भूखों मरे जा रहे हैं," मीश्का चिल्लाया। हमने जल्दी से एक अण्डा उबाला, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और उसको जमीन पर बिखेर दिया। लेकिन चूजे नहीं जानते थे कि उसके साथ क्या करें। हमने उन्हें अपने हाथों से खिलाने की कोशिश की।

"खाओ भी पगले, खाओ," हमने कहा। लेकिन चूजों ने उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। इसी समय मीश्का की माँ रसोई-घर में आयीं।

"माँ, ये अण्डा तो खाते ही नहीं," मीश्का ने कहा।

"तुम उन्हें सिखाओ।"

"कैसे? हमने उनसे खाने को कहा, लेकिन वे हमारी बात सुनते ही नहीं।"

"चूजों को ऐसे नहीं सिखाया जाता। इसके लिए तुम्हें अपनी उँगली से फर्श को ठुकठुकाना चाहिए।"

मीश्का चूजों के पास बैठ गया और उसने अण्डे के चूरे के पास फर्श को ठुकठुकाया। चूजों ने खाने की तरफ चोंच मारती उँगली को ध्यान से देखा और उसकी नकल करने लगे। कुछ ही मिनटों में उन्होंने सारा अण्डा चट कर दिया। फिर हमने एक तश्तरी में पानी रख दिया। उन्होंने उसे भी पिया। अब की बार हमें उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं पड़ी। फिर वे एक जगह इकट्ठा हो गए और हमने उनको गर्मी देने के लिए बर्तन में रख दिया।

उस दिन जब मारिया पेत्रोव्ना क्लास में आयीं, हम सब उन्हें यह खबर देने के लिए दौड़े कि चूजे निकल आए हैं। वे बहुत हैरान और खुश हुईं।

"तो आज तुम्हारे चूजों का जन्मदिन है," वे बोलीं। "बधाइयाँ!"

हम सब हँस पड़े और वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "हमें उनके जन्म की खुशी में पार्टी देनी चाहिए। आज ही हो जाए।" यह विचार सभी को बहुत पसन्द आया।

"हाँ, हाँ, पार्टी होनी ही चाहिए। मारीया पेत्रोव्ना, आप हमारे चूजों के जन्मदिन की पार्टी में आएँगी न?"

"धन्यवाद लड़को, मैं जरूर आऊँगी," मारिया पेत्रोव्ना ने हँसते हुए कहा। "मैं उनके लिए उपहार भी लाऊँगी।"

"हम सबको उनके लिए उपहार लाने चाहिए!" लड़कों ने एक साथ चिल्लाकर कहा।

स्कूल से घर आने पर मीश्का और मैं अधीरता से मेहमानों की राह देखने लगे। हम यह देखने को व्याकुल थे कि चूजों को किस तरह के उपहार मिलेंगे। पहले-पहल सेन्या बोब्रोव एक गुलदस्ता लेकर आया।

"यह किसलिए?" मीश्का ने पूछा।

"चूज़ों के लिए। यह मेरी ओर से उपहार।"

"चूज़ों के लिए फूल! वे फूल नहीं खा सकते न, या खा सकते हैं?"

"उनके लिए इनको खाना ज़रूरी नहीं है। वे इनको देखेंगे और सूँघेंगे।"

"भई वाह, कैसी सूझ है! मानो उन्होंने पहले कभी फूल देखे ही न हों।"

"बेशक नहीं देखे। इन्हें रखने के लिए मुझे एक गुलदान दो। तुम देखोगे कि ये कितने सुन्दर लगते हैं।"

हमने एक गुलदान में पानी डालकर उसमें फूल रख दिए। इसके बाद सेर्योजा और वादिक आए। वे दोनों स्नोड्रॉप फूल के गुच्छे लाए थे। "हर कोई फूल ही किसलिए ला रहा है?" मीश्का ने भौंहें चढ़ाकर पूछा।

"क्या हमारे उपहार तुम्हें पसन्द नहीं हैं?" वादिक ने बुरा मानकर कहा। "उपहार की इस तरह नुक्ताचीनी करना अच्छा नहीं होता।"

हमने उनके फूल भी पानी में रख दिए। फिर वान्या लोज्किन आधा किलोग्राम जई का आटा लेकर आया। मीश्का शंकित-सा दिखाई देने लगा, "चूज़े शायद इसे न खाएँ।"

"हम कोशिश तो कर ही सकते हैं," वान्या बोला।

"नहीं, पहले मारिया पेत्रोव्ना से पूछना ज्यादा ठीक रहेगा।"

इसी समय मारिया पेत्रोव्ना आयीं वे समाचारपत्र में लपेटी कोई चीज़ लायीं थीं। खोलकर देखा तो उसमें दूध जैसी किसी चीज़ से भरी हुई बोतल थी।

"दूध!" मीश्का बोल उठा। "उनको दूध पिलाने की बात हमने कभी सोची ही नहीं थी!"

"यह दही है," मारिया पेत्रोव्ना बोलीं। "पहले कुछ दिनों के लिए उन्हें इसी की जरूरत है। तुम देखो कि वे इसको कितना पसन्द करते हैं।"

हमने चूज़ों को बर्तन से बाहर निकाला और तश्तरी में दही उड़ेल दिया। उन्होंने उसे बड़े चाव से पी लिया।

"यह है चूज़ों का असली उपहार!" मीश्का ने खुश होकर कहा। "हमें पता होना चाहिए कि चूज़ों के जन्मदिन की पार्टी में क्या ले जाना चाहिए।"

एक के बाद एक मेहमान आते रहे। वीत्या और जेन्या बाजरा लाए। इतने में ल्योशा कूरोच्किन चूज़ों के लिए एक झुनझुना लेकर दौड़ता हुआ आया।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या लाऊँ। रास्ते में एक दुकान में मुझे ये झुनझुने नजर आए, सो मैं एक खरीद लाया।"

"क्या शानदार विचार है!" मीश्का ने व्यंग्य के साथ कहा। "चूज़ों के जन्मदिन के लिए एकदम सही भेंट!"

"मुझे क्या पता था कि क्या लाना चाहिए? और हो सकता है कि चूजे इसे पसन्द ही करें।"

वह चूज़ों के पास लपक गया और उनके ऊपर झुनझुना बजाने लगा। उन्होंने दही पीना छोड़ दिया और ऊपर देखने लगे।

"देखा!" ल्योशा खुशी के मारे चिल्ला पड़ा। "उनको यह अच्छा लग रहा है!" सब लोग हँस पड़े।

"ठीक है," मीश्का बोला। "अब उन्हें आराम से खाने दो।"

मैंने मारिया पेत्रोव्ना से पूछा कि क्या हम चूज़ों को जई का आटा खिला सकते हैं। उन्होंने कहा कि वे किसी भी तरह का आटा खा सकते हैं, बशर्ते कि वह पका हुआ हो।

"आटे को कैसे पकाते हैं?" मीश्का ने जानना चाहा।

"उसी तरह जिस तरह हम दलिया पकाते हैं," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा।

मीश्का और मैं उसी समय दलिया पकाना चाहते थे, लेकिन इतने में एक और मेहमान आ गया – कोस्त्या देव्यात्किन।

"क्या तुम भी उपहार लाए हो?" लड़कों ने पूछ लिया।

"हाँ, हाँ," कोस्त्या ने उत्तर दिया और जेब में से दो कचौड़ियाँ निकालीं।

"कैसा मजेदार उपहार है!" लड़के हँसने लगे।

"जन्मदिन की पार्टियों में हमेशा ही कचौड़ियाँ मिलती हैं, या नहीं?" कोस्त्या बोला।

"इनमें क्या भरा हुआ है?" मीश्का ने सन्देह से पूछा।

"चावल।"

"चावल?" मीश्का चिल्लाया।

उसने कोस्त्या के हाथ से कचौड़ियाँ छीन लीं और उनमें से चावल निकालने लगा।

"ऐ, क्या कर रहे हो!" कोस्त्या बोला। "क्या तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा नहीं है?"

लेकिन मीश्का ने जवाब नहीं दिया। उसने चावल एक तश्तरी में डाले और चूज़ों के सामने रख दिए। उन्होंने उसपर सीधे चोंच चलाना शुरू कर दिया।

जब माया ने देखा कि हर कोई चूजों के लिए उपहार लाया है, तो वह अपने कमरे में गई और एक लाल फीता ले आयी। उसने उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और फिर हर चूजे के गले में एक-एक लाल फीता बाँध दिया। हमने फूलों के गुलदान जमीन पर चूजों के नजदीक रख दिए। फूलों, लाल फीतों और दही, चावल तथा ताजे पानी की तश्तरियों को देखकर हमें सचमुच ही किसी जन्मदिन जैसा लगने लगा। कोस्त्या चूजों को घास खिलाना चाहता था, लेकिन मारिया पेत्रोव्ना ने कहा कि इतनी जल्दी उनको घास खिलाना ठीक नहीं है। हाँ, कल खिला सकते हैं।

चूजों के काफी खाने-पीने के बाद हमने उनके फीते निकाल लिए और उनको गर्म बर्तन में रख दिया। मारिया पेत्रोव्ना ने रसोई-घर के एक हिस्से में बाड़ा लगा देने की सलाह दी और उन्हें ठण्ड से बचाने के लिए गर्म पानी का एक बर्तन रखने के लिए कहा।

"सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि इनको देहात ले जाया जाए। यहाँ घर में बन्द रहने से वे बीमार पड़ सकते हैं और मर सकते हैं। इन्हें ताजी हवा मिलनी चाहिए," मारिया पेत्रोव्ना बोलीं।

हमने उनको इनक्युबेटर और उसमें पड़े दोनों अण्डे दिखाए। "मुझे डर है कि इनमें से अब चूजे निकलेंगे ही नहीं," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा। "लेकिन कोई बात नहीं। जो कुछ तुमने किया है, वही बहुत अच्छा है।"

"यह सब इसीलिए कि इन सब लड़कों ने इसमें हाथ बँटाया और हमारी मदद की," मीश्का बोला। "अकेले हम दोनों यह नहीं कर पाते।"

"मुझे तो डर था कि कुछ भी हाथ नहीं आएगा, क्योंकि एक बार मैं सो गया था और ताप नीचे चला गया था," मैंने कहा।

"ये थोड़े ठण्डे भी हो जाएँ, तो भी कुछ नहीं बिगड़ता," मारिया पेत्रोव्ना बोलीं। "भला मुर्गी अपने अण्डों पर सारा समय थोड़े ही बैठती है। दिन में एकाध दफा वह अण्डों को वैसे ही छोड़कर कुछ चारा-दाना लेने चली जाती है, जिससे भ्रूण के विकास के लिए कुदरती हालत बनी रहे। लेकिन हाँ, उनको ज्यादा गर्मी पहुँचाना खतरनाक है।"

"मेरी भूल से एक बार उन्हें ज्यादा गर्मी पहुँच गयी थी," मीश्का बोला। "ताप 40 डिग्री तक चला गया था।"

"बहुत ज्यादा नुकसान होने से पहले ही तुम्हारा ध्यान उस पर चला गया होगा," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा। "लेकिन अगर तुमने ताप बहुत समय तक ज्यादा रहने दिया होता तो अण्डे सचमुच खराब हो जाते।"

उस शाम को हमने शेष दो अण्डों को तोड़कर देखा। दोनों में भ्रूण अविकसित रूप में थे। जीवन समाप्त हो गया था। चूज़े पैदा होने से पहले ही चल बसे थे। शायद यह ज़्यादा गर्मी पहुँचने का ही परिणाम था।

हमने लैम्प बुझा दिया। पूरे तेईस दिन तक वह बराबर जलता रहा था। तापमापी में पारा धीरे-धीरे नीचे आ गया। इनक्युबेटर ठण्डा हो गया। लेकिन अँगीठी के नज़दीक बर्तन में हमारा प्यारा कुनबा था – दस रोएँदार पीले चूज़े।

देहात की ओर

हमारा यह प्यारा कुनबा बड़े मज़े के साथ रह रहा था। चूज़े जब तक एक साथ होते, बड़े मज़े में रहते। लेकिन अगर उनमें से कोई भी औरों से ज़रा अलग हो जाता, तो वह अधीरता के साथ चिल्लाने लगता और अपने भाई–बहनों की खोज में इधर–उधर दौड़ने लगता और उन्हें पाए बिना शान्त न होता।

माया अपने चूज़े को शुरू से ही ले लेना चाहती थी। लेकिन हम उसे लेने नहीं देते थे। एक दिन उसने कह दिया कि वह अब ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करेगी और फिर उसने एक चूज़े को उठाया और अपने कमरे में ले गयी। आधे घण्टे में ही वह रोती हुई वापस आ गयी, "मुझसे नहीं सहा जाता। उसे रोते देखकर मेरा दिल टूट जाता है। मैंने सोचा था कि कुछ देर बाद वह आदी हो जाएगा, लेकिन वह इतनी बेबसी से रोता रहा कि मुझसे सहा नहीं गया!"

जैसे ही उसने चूज़े को फर्श पर छोड़ा, वह सीधे कोने में एक साथ सटे खड़े अपने साथियों की ओर लपक गया।

हमने रसोई–घर के एक कोने को बाड़ा बनाकर उनके लिए अलग कर दिया था। फर्श पर मोमजामे का एक टुकड़ा बिछा दिया था और उस पर बर्तन में गर्म पानी रख दिया था। इस बर्तन को हमने तकिए से ढँक दिया था, ताकि पानी जल्दी ठण्डा न हो जाए। चूज़े तकिए के नीचे गर्म बर्तन के चारों ओर आराम करते और ऐसे मज़े में रहते मानो वे अपनी माँ के पंखों के नीचे रह रहे हों। गर्म पानी के बर्तन ने माँ-मुर्गी की जगह ले ली थी।

कभी-कभी हम उनको बाहर खुले में ले जाते। लेकिन यह जगह उनके लिए खतरनाक थी – चारों तरफ आवारा कुत्तों और बिल्लियों की भरमार थी। इसलिए उनका ज़्यादा समय घर के भीतर ही कटता और हमें चिन्ता रहती कि उन्हें ताज़ा हवा काफी नहीं मिल रही है।

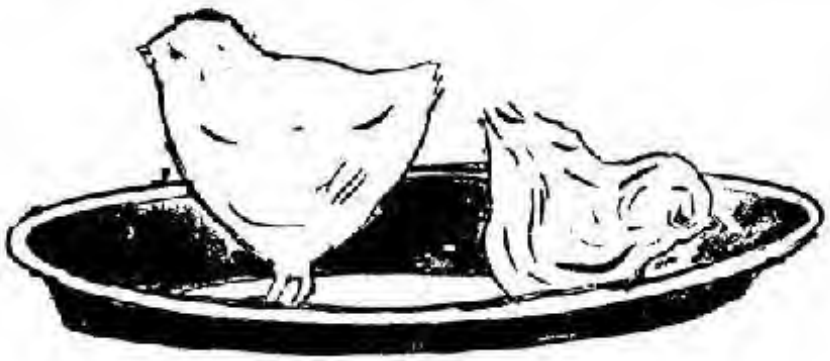

एक चूज़े की तो हमें खासकर बड़ी फिक्र थी। वह औरों से छोटा और कम चपल था। वह हमेशा सोच में पड़ा रहता था। औरों के साथ इधर-उधर मटरगश्ती करने की बजाय वह अक्सर अकेला ही एक जगह पर बैठा रहता। वह खाता भी बहुत कम था। यह नम्बर पाँच था, जो सबके बाद पैदा हुआ था।

"हमें सचमुच उनको देहात ले जाना चाहिए," मीश्का ने कहा। "मुझे डर है कि कहीं वे बीमार न पड़ जाएँ।"

लेकिन हमसे उनके बिछुड़ने की बात सहन नहीं होती थी और इसलिए हम इसे रोज-रोज टालते जा रहे थे।

एक दिन सुबह रोज की तरह मीश्का और मैं चूज़ों को चुगाने के लिए आए। अब तक वे हमें पहचानने लगे थे और हमसे मिलने के लिए वे गर्म बर्तन के नीचे से लपके आते थे। उनके लिए हम तश्तरी भर बाजरे का दलिया लाए थे। वे एक-दूसरे को सामने से धकेलते हुए, एक-दूसरे के ऊपर से कूदते हुए, सब से आगे रहने की कोशिश करते हुए उस पर टूट पड़े। उनमें से एक तो अपने पंजों के बल तश्तरी पर ही आकर खड़ा हो गया।

"नम्बर पाँच कहाँ है?" मीश्का ने पूछा। नम्बर पाँच आम तौर पर औरों के पीछे ही रहता था। सबसे कमज़ोर होने के कारण उसे अलग धकेल दिया जाता था और हमें उसको अलग चुगाना पड़ता था। कभी-कभी तो वह कुछ भी नहीं खाता था। लेकिन सबके साथ वह दौड़ता अवश्य आता था। उसे अकेले छूट जाना पसन्द नहीं था। लेकिन इस समय उसका कहीं पता न था। हमने चूज़ों को गिना और देखा कि एक कम है।

"कहीं वह बर्तन के पीछे तो नहीं छिप रहा?" मैंने कहा।

मैंने बर्तन के पीछे झाँका तो देखा कि वह वहाँ फर्श पर पड़ा हुआ है। मैंने सोचा कि वह यूँ ही आराम कर रहा है। मैंने हाथ बढ़ाया और उसे उठा लिया। उसका नन्हा-सा बदन एकदम ठण्डा पड़ा हुआ था और उसका सिर उसकी पतली-सी गर्दन पर बेजान लटका हुआ था। नम्बर पाँच मर चुका था।

बहुत देर तक हम उसे देखते ही रहे। हमें इतना दुख हो रहा था कि हम बोल भी न सके।

"यह हमारा ही दोष है!" आखिर मीश्का बोला। "हमें उसे देहात ले जाना चाहिए था। वहाँ की ताज़ा हवा में वह अच्छा और मज़बूत हो जाता।"

पीछे के आँगन में एक पेड़ के नीचे हमने उसे दफना दिया। अगले ही दिन हमने बाकी सब चूज़ों को टोकरी में रखा और देहात की ओर चल दिए। सब लड़के हमें विदा करने आए।

चूज़े की विदाई के समय अपने चूज़े को चूमते हुए माया

बुरी तरह रो रही थी। उसे रख लेने की उसकी बड़ी इच्छा थी। लेकिन उसे डर था कि चूज़े को अपने नन्हे-नन्हे भाई-बहनों की याद आएगी। इसलिए उसने उसे देहात जाने दिया।

हमने टोकरी को दुशाले से ढँका और स्टेशन चले गए। टोकरी में चूज़े आराम और गर्माई में थे। सारे रास्ते वे हलकी आवाज़ में चीं-चीं करते एक-दूसरे से बातें करते शान्त बैठे रहे। चूज़ों की चीं-चीं सुनकर यात्री हमारी ओर कौतुहल से देखने लगे और भाँप गए कि हमारी टोकरी में क्या है।

"आ गए, मेरे नन्हे मुर्गी-पालक! और अण्डे लेने आए हो न?" हमें देखकर नताशा मौसी ने हँसकर कहा।

"जी नहीं," मीश्का ने कहा। "उलटे हम आपके लिए कुछ चूज़े लाए हैं।"

नताशा मौसी ने टोकरी में झाँककर देखा।

"भई वाह!" वे चहकीं, "इतने सारे चूज़े तुम कहाँ से लाए?"

"हमने इन्हें अपने इनक्युबेटर से पैदा किया है।"

"क्या मज़ाक कर रहे हो! तुम इन्हें चिड़ियों की किसी दुकान से खरीदकर लाए हो।"

"नहीं, नताशा मौसी। महीने भर पहले हमें दिए अण्डों की याद है? तो हम उन्हें ही वापस लाए हैं, लेकिन अब वे चूज़े हो गए हैं।"

"भई, क्या कहूँ!" नताशा मौसी ने कहा। "तो बड़े होकर तुम मुर्गी-पालक या ऐसे ही कुछ और बनोगे।"

"अभी तो हमें भी मालूम नहीं," मीश्का ने कहा।

"लेकिन चूज़ों से अलग होते तुम्हें दुख नहीं हो रहा?"

"हमें बहुत रंज है," मीश्का ने उत्तर दिया। "लेकिन बात यह है कि शहर में रहना उनके लिए ठीक नहीं है। यहाँ वे बड़े होकर अच्छे मज़बूत पंछी हो जाएँगे। मुर्गियाँ तुम्हें अण्डे देंगी और मुर्गे बाँग देंगे। एक चूज़ा मर गया था और हमने उसे पेड़ के नीचे दफना दिया।"

"बेचारे!" नताशा मौसी मीश्का को और मुझे अपनी ओर खींचते हुए बोलीं। "कोई बात नहीं। यह किसी के बस की बात नहीं है। बाकी सब तो बढ़िया हट्टे-कट्टे हैं।"

हमने चूज़ों को टोकरी से निकाल दिया और उन्हें धूप में मज़े से खेलते हुए देखते रहे। नताशा मौसी ने कहा कि उनकी एक मुर्गी अण्डे से रही है, सो मीश्का और मैं उनके साथ उसे देखने के लिए बाड़े में गए। वह एक टोकरी में

बैठी थी, जिसके सब तरफ से भूसा निकल रहा था। उसने घूरकर हमारी ओर देखा, मानो उसे डर लग रहा हो कि हम उसके अण्डे लेने आए हैं।

"यह अच्छी बात है," मीश्का ने कहा। "अब हमारे चूजों को खेलने के लिए साथी भी मिल जाएँगे। वे खूब मजे करेंगे।"

सारा दिन हमने देहात में बिताया। हम जंगल में नदी के किनारे सैर करते रहे। आखिरी बार जब हम यहाँ आए थे, तब बसन्त की शुरुआत थी और खेत अभी भी कोरे थे। उस समय ट्रेक्टर खेतों में जमीन को खोद रहे थे। अब खेत हरे-भरे पौधों से ढँके थे और जहाँ तक नजर जाती थी, एक विशाल हरा कालीन-सा फैला दिखाई देता था।

जंगल बड़ा सुन्दर लग रहा था। वहाँ तरह-तरह के गुबरैले और कीड़े-मकोड़े घास पर रेंग रहे थे। चारों ओर तितलियाँ फड़फड़ा रही थीं और पेड़ों पर पंछी गा रहे थे। सब कुछ इतना सुन्दर था कि घर जाने को मन नहीं करता था। हमने निश्चय किया कि गर्मियों में हम यहाँ फिर आएँगे। नदी के किनारे तम्बू लगाएँगे और उसमें रॉबिनसन क्रूसो की तरह रहेंगे।

लेकिन आखिर जाने का समय आ ही गया। हम विदा लेने के लिए नताशा मौसी के पास गए। उन्होंने हम दोनों को ट्रेन में खाने के लिए एक-एक केक दिया और हमसे वायदा करवाया कि गर्मियों की छुट्टी में हम उनके पास ही आकर रहेंगे। विदा होने से पहले हम चूजों को आखिरी बार देखने के लिए पिछवाड़े के बाड़े में गए। लगता था कि वे वहीं रम गए थे और मजे से चीखते हुए पेड़-पौधों में दौड़ रहे थे। लेकिन अभी भी वे साथ-साथ ही रहते थे और चहचहाते जाते थे। शायद इसलिए कि अगर उनमें से कोई घास में भटक जाए, तो वह औरों को आसानी से पा सके।

"अच्छा, प्यारे चूजो, हम चलें!" मीश्का ने कहा। "खुली हवा और धूप में खूब खेलो-कूदो, बड़े और बलवान बनो और बढ़िया पंछी बनो। हमेशा साथ रहो और एक-दूसरे की मदद करो। याद रखो, तुम सब भाई-भाई हो, एक ही माँ... यानी एक ही इन्क्युबेटर के बच्चे। जब तुम सीधे-सादे अण्डे थे, तब एक साथ पड़े हुए थे और न दौड़ सकते थे, न बोल.. यानी चहक सकते थे। और... और हमें भूल न जाना। बस!"

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास करना जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं – मासिक बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक*, विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर *स्रोत* तथा शैक्षिक पत्रिका *संदर्भ*। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

इन्क्युबेटर गरम था, लैम्प अभी भी जल रहा था, लेकिन हमारी आशाएँ खत्म हो चुकी थीं। मीश्का हाथ में अण्डे को लिए उसकी ओर टकटकी लगाए चुपचाप बैठा था। हम निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें। उसको तोड़कर देख लें या कुछ देर और इन्तज़ार करें। यकायक मीश्का चौंक उठा और मेरी तरफ फटी-फटी आँखों से देखने लगा।...

पहले तो मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दिया, लेकिन फिर एक जगह पर बाल-जैसी चीज़ नज़र आई।

"तुमने इसको किसी चीज़ से टकराया तो नहीं?"

"तो...तो क्या चूज़े ने ऐसा किया है?"

ISBN: 9788187171676

एकलव्य

मूल्य: 40.00 रुपए